अजय कुमार उत्तम
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
गुरु पूर्णिमा विशेषांक
जून-९१

गुरु पूर्णिमा–१९९१

बैंगलौर

गुरु पूर्णिमा शिष्यों और साधकों के लिए वर्ष का सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय पर्व होता है, वर्ष में अन्य अवसरों पर चाहे साधक या शिष्य अपने गुरु के पास पहुंच सकें या न पहुंच सकें, परन्तु गुरु पूर्णिमा के अवसर पर तो हर हालत में शिष्य गुरु के पास पहुंचता ही है।

गुरु पूर्णिमा पर्व

इस वर्ष गुरु पूर्णिमा पर्व २४-२५-२६ जुलाई १९९१ को बैंगलौर में सम्पन्न होने जा रहा है, और ये तीन दिन आध्यात्मिक दृष्टि से और साधना की दृष्टि से अपने आप में अद्वितीय होंगे, जिनमें अठारह उन विद्याओं और साधनाओं का प्रदर्शन किया जायेगा, जो कि अब तक गोपनीय रही हैं, इसके साथ ही साथ कुण्डलिनी योग, ध्यान योग, तथा पहली बार परा-अपरा विद्या के बारे में जानकारी दी जायेगी, और साधकों को इस क्षेत्र में अग्रसर किया जायेगा।

बैंगलौर

कर्नाटक की राजधानी बैंगलौर भारत का सबसे सुन्दर शहर कहलाता है, यहां की जलवायु उत्तम जलवायु कही गई है, और फिर भारत में बैंगलौर जितना साफ सुथरा स्वच्छ शहर है, उतना शायद अन्य कोई शहर नहीं।

हमारा प्रयत्न यह रहेगा कि इन तीन दिनों में साधकों को बैंगलौर के महत्वपूर्ण स्थानों को तो दिखाएंगे ही, साथ ही साथ मैसूर का विश्व विख्यात **"वृन्दावन गार्डन"** और भारत के अद्वितीय हिल स्टेशन **"ऊटी"** पर भी साधकों को ले जाने की व्यवस्था की जायेगी।

साधकों को २३ जुलाई तक बैंगलौर पहुंच जाना चाहिए, स्थान आदि के बारे में विस्तार से जानकारी निम्न पते पर प्राप्त की जा सकती है, जो कि गुरु पूर्णिमा के आयोजक हैं—

गोवर्धन बी० वर्मा
गोवर्धन एजेन्सी, एम०डी०पी० मार्केट थर्ड फ्लोर बटप्पा लेन,
सी०टी० स्ट्रीट क्रॉस, बैंगलौर-५६०००२ (कर्नाटक)

इसके अलावा टेलीफोन पर इनसे सम्पर्क करने के लिए—

फोन—ऑफिस : २१५९०१
घर : २३६३८१

वर्ष–११

अंक–६

जून-१९९१

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट कालोनी,
जोधपुर–३४२००१ (राज०)
टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोम्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ श्रीं गुरुर्वे आहूतं पूर्णिमा त्वं सदं सह
विप्रे यता पूर्वे श्रियं सह मदैव चित्तं ।।

श्री गुरुदेव का यह आहूत मन्त्र है, जिसे मात्र ग्यारह बार उच्चारण करने से अदृश्य रूप में गुरुदेव उपस्थित होते ही हैं और शिष्य या साधक का कार्य सम्पन्न कर लेते हैं।

गुरु पूर्णिमा तो
गुरु के चरणों में
अपना सब कुछ न्यौछावर करने का पर्व है

भारत के शास्त्रों में और भारत की परम्परा में गुरु का महत्व सबसे अधिक माना गया है, इसका कारण यह है कि जो व्यक्ति साधना करना चाहते हैं, उनके लिए जीवित जाग्रत कोई व्यक्तित्व होता ही नहीं, जो कि उनका मार्ग-दर्शन कर सके।

देवी-देवता मानव के लिए निश्चय ही सहायक होते हैं, परन्तु वे पूर्ण रूप से मार्गदर्शन देने में सक्षम नहीं हो पाते, सही और प्रामाणिक रूप से दिशा निर्देश देना और साधक की बूंद को पूरा समुद्र बना देना गुरु के द्वारा ही संभव है।

इसीलिए शास्त्रों में गुरु को 'जीवित देव' या 'सम्पूर्ण व्यक्तित्व' **स्वीकार किया है जो देवता और मनुष्य के बीच की कड़ी है, गुरु ही ऐसा व्यक्तित्व होता है, जो अनजान और अज्ञानी साधक से तो परिचित होता ही है, देवताओं से भी उसका पूरा-पूरा सम्बन्ध होता है, इसीलिए साधक को देवत्व तक पहुंचाने का आधार गुरु ही होता है।**

और फिर एक सामान्य साधक यह समझ ही नहीं सकता कि साधना क्या है ? साधना कैसे की जा सकती हैं? और किस प्रकार से देवी-देवताओं से सम्पर्क बनाया जा सकता है वह कौन सा रहस्य है, जिसके द्वारा एक साधक अपने इष्ट या देवता के जाज्वल्यमान, वास्तविक साक्षात् स्वरूप के दर्शन कर सके, और यदि उनके दर्शन हो भी जाते हैं, तब भी शिष्य के पास वह आंख नहीं होती जिससे वह अपने इष्ट को पहिचान सके, वह जबान नहीं होती जिसके द्वारा इष्ट की स्तुति या उसके गुणगान कर सके, वह सीना नहीं होता जिससे इष्ट को अपने अन्दर पूरी तरह से समाहित कर सके।

ऐसी स्थिति में केवल गुरु ही वह व्यक्तित्व होता है, जो देवताओं से या इष्ट से तो परिचित होता ही है, साधक से भी परिचित होता है, और वह साधक की उंगली पकड़ कर साधना के माध्यम से उस जगह खड़ा कर देता है, जहां उसे इष्ट के साक्षात् दर्शन हो सकें, उसे वह आंख देता है, जिससे वह इष्ट के स्वरूप को पहिचान सके, और

पूर्णता के साथ उस इष्ट को अपने अन्दर समाहित कर सके ।

और फिर श्वान की तरह जीवित रहने में या विचरण करने में आनन्द ही क्या है ? पशु की तरह जीवन यापन करने का प्रयोजन ही क्या है ? जीवन तो उसे कहते हैं, जब व्यक्ति अत्यन्त साधारण स्थिति में जन्म ले, और योग्य गुरु के मार्ग-निर्देशन में साधना के पथ पर चलता हुआ उस परम सत्ता को या पूर्णता को प्राप्त कर ले, जो कि अपने आप में 'ब्रह्म' कहा जाता है, ऐसा होने पर ही उसे अखण्ड आनन्द की अनुभूति होती है, उसकी कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है, और वह ध्यान में पूर्णतः निमग्न हो जाता है ।

पूर्ण भौतिक उपलब्धियां

और फिर गुरु केवल उसे ब्रह्म का या इष्ट का मार्ग ही नहीं दिखाता, अपितु उसके जीवन की समस्याओं को भी दूर करता है, आने वाली बाधाओं को हटाता हैं, दुःखों और विपत्तियों में सहायक होता है, रास्ता दिखाता है और उसे धैर्य बंधाता हुआ उस विपत्ति से उसे बाहर निकाल लेता है ।

गुरु तो वट वृक्ष की शीतल छाया के समान होता है जिसके तले बैठने से अपूर्व शान्ति और आनन्द की अनुभूति होती है, गुरुदेव तो एक बसन्त की तरह होते हैं, जिसे प्राप्त कर व्यक्ति सुगन्ध से भर जाता है; मन में एक नया जोश, एक नयी पुलक और आनन्द की अनुभूतियां ले कर अपने रास्ते पर बिना हिचकिचाहट के आगे बढ़ जाता है।

कभी अपने आपको परख भी तो लें

हमें अपने आप पर ही भरोसा नहीं है, क्योंकि हमारी बुनियाद ही अविश्वास, संदेह और भ्रम पर आधारित है, हम स्वयं संशय ग्रस्त हैं, इसीलिए सामने वाले को भी पूरी तरह से पहिचान नहीं पाते, हम स्वयं अधूरे हैं, इसीलिए सामने वाले की पूर्णता अहसास नहीं कर पाते, हम स्वयं अज्ञानी हैं इसीलिए उस गुरु के ज्ञान को, उसके चिन्तन को और उसकी विराटता को अनुभव नहीं कर पाते, एक छोटी सी बूंद समुद्र को कैसे पहिचान सकती है ? एक छोटा सा पक्षी सम्पूर्ण आकाश को कैसे नाप सकता है ?

पर आप अपने आप में दम्भ लिये हुए हैं, कि आप दूसरे को पहिचान सकते हैं या गुरु को जानने की क्षमता आप में हैं, आप जैसे हैं, उसी तरीके से गुरु को भी जानते हैं, अपने संदेह से, अपनी क्षुद्रता से, अपनी न्यूनता से ऊपर आप कभी भी उठे ही नहीं, और जब आप उठेंगे नहीं तो उस विराट व्यक्तित्व को पहिचान भी कैसे सकेंगे ?

और फिर समाज तो आपके और गुरु के बीच में व्यवधान डालेगा ही, समाज तो आपके और गुरु के बीच बड़े-बड़े पर्दे खड़े करेगा ही, समाज तो बार-बार आपके मन को भ्रमित करेगा ही, इसलिए कि इससे उनका स्वार्थ पूरा होता है, इसलिए कि समाज और आपका परिवार यह नहीं चाहता कि आप उससे अलग हट कर अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर सकें, अलग हट कर पूरी क्षमता के साथ खड़े हो सकें, और अपनी आंखों में वह क्षमता, वह चिनगारी, वह रोशनी ला सकें, जिसके माध्यम से गुरु को पहिचाना जा सके ।

और पिछले पांच हजार वर्षों का इतिहास हमारे सामने खुला पड़ा है, कि जब-जब भी कोई महामानव अवतरित हुआ है तो हमने अपनी आंखें बन्द कर ली हैं, हमने उनको पहिचानने और उनका लाभ उठाने की स्थिति ही पैदा नहीं की, कृष्ण को समाज ने और लोगों ने जितनी गालियां दीं, जितना अपमान किया, वह उस समय के समाज के इतिहास में अंकित है, शंकराचार्य को समाज की वजह से दर-दर भटकना पड़ा, गोरखनाथ का राज्य से निष्कासन कर दिया गया, महावीर स्वामी के कानों में कीलें ठोक दी गईं, बुद्ध को भूखे मरने के लिए विवश कर दिया गया, सुकरात को जहर पीने के लिए बाध्य कर दिया, और ईसा मसीह को सूली पर टांग कर उसके हाथों और पैरों में कीले ठोंक दी गईं ।

समाज ने तो यही किया, और आज का समाज भी उसी पिछले समाज से निकला हुआ है, और वर्तमान समाज भी यही सब कुछ कर रहा है, परन्तु यदि आप सक्षम हैं, यदि आप में चेतना है, यदि आप समाज से अलग हट कर खड़े होने की हिम्मत रखते हैं, तो आप इस प्रकार के व्यक्तित्व को पहिचान सकते हैं, उनका लाभ उठा सकते हैं, उनके चरणों में बैठ कर ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, और अपने जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान कर सकते हैं।

यह आपाधापी, यह भाग-दौड़, यह परिवार का पालन-पोषण और यह जीवनयापन तो चल ही रहा है, और चलता ही रहेगा, आप चाहे अपने बेटे-बेटियों के लिए और परिवार के लिए कुछ भी करें, आपके साथ ये चलने वाले नहीं हैं. दुःख और वेदना आपको अकेले ही भोगनी है, मृत्यु के रास्ते पर आपको अकेले ही चलना है, जब कोई साथ है ही नहीं, तो फिर उनके लिए इतना सब कुछ करने से भी क्या हो जायेगा ?

आप जो धन संचय कर रहे हैं, वह यदि बेटे-बेटियों के लिए या परिवार के लिए ही है, तो फिर जीवन में वे तो ठेठ तक साथ चलने वाले हैं नहीं, फिर उनके लिए इतना संताप झेलने से क्या हो जायेगा ? यदि आप ही इस धन का उपयोग नहीं कर सकते, यदि आप ही अपने जीवन में आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते, तो फिर आपकी भाग दौड़ का प्रयोजन ही क्या रह जायेगा ? यदि आप गुरु के चरणों में पहुंचने का समय नहीं निकाल सकते, तो फिर आप में और बंधे हुए पशु में क्या अन्तर है ?

गुरु पूर्णिमा

और इस बन्धन से मुक्त होने का मार्ग गुरु पूर्णिमा है, जीवन को समझने का रास्ता गुरु पूर्णिमा है, अपने स्वार्थ से परे हट कर पूर्ण रूप से गुरु के चरणों में समर्पित हो जाने का पर्व गुरु पूर्णिमा है।

यह गुरु पूर्णिमा ही है, जो आप जैसे सामान्य व्यक्तित्व को गुरु तक पहुंचाने का आधार, अवलम्ब है, यह गुरु पूर्णिमा ही है जब साधक और शिष्य अपने हजार काम छोड़ कर के भी गुरु के चरणों में पहुंच जाता है, और यह सिद्ध कर देता है कि वह स्वतन्त्र है, और परिवार से, बन्धनों से जकड़ा हुआ नहीं है, वह गुलाम पशु नहीं है, जो एक ही घेरे में घूमने के लिए विवश है।

इस वर्ष गुरु पूर्णिमा २६ जुलाई ९१ को है, जो बंगलौर में सम्पन्न हो रही है, और हमें इस अवसर पर अपनी पूर्ण क्षमता और सामर्थ्य के साथ गुरु के चरणों में उपस्थित होना चाहिए और अपना सब कुछ न्यौछावर कर यह सिद्ध कर देना चाहिए कि वह सही अर्थों में शिष्य है, वह सही अर्थों में मुक्त साधक है, वह सही अर्थों में बूंद है—जो उछल कर समुद्र बन जाने के लिए आतुर है और वह सही अर्थों में राजहंस है, जो अपने पंख फैला कर सम्पूर्ण आकाश को नापने की क्षमता रखता है।

वास्तव में ही उसी को साधक कहा जा सकता है, उसी को शिष्य कहा जा सकता है, जो घोर अन्धकार में भी आंख खोल कर देखने का प्रयत्न करता है, जो अपने हृदय के नेत्र जागृत कर सामने खड़े सामान्य देह धारण किये हुए गुरु के शरीर में विराट सत्ता के दर्शन करता है, और अनुभव करता है कि ऐसा व्यक्तित्व हजार-हजार वर्षों बाद पृथ्वी ग्रह पर अवतरित होता है, हम मन से, धन से और अपने सम्पूर्ण तन से उनके चरणों में समर्पित होकर शिष्यता की उन बुलन्दियों को स्पष्ट करें, जो सही अर्थों में शिष्यता कहलाती है, जिन्हें देख कर गोरखनाथ, शंकराचार्य आदि संन्यासी योगी भी अहसास कर सकें कि वास्तव में ही ऐसे ही शिष्य होने चाहिए, जो अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करके ही रहते हैं। ●

पारदेश्वर शिवलिंग

संसार में पारदेश्वर शिवलिंग के बारे में जितनी अधिक खोज हुई है जितनी अन्य किसी भी विषय पर नहीं, भारत के वेद, शास्त्र, पुराण आदि तो पारदेश्वर शिवलिंग की महिमा से भरे पड़े हैं, पर साथ ही पश्चिम के वैज्ञानिकों ने भी यह स्वीकार किया है कि बद्ध पारद और उससे निर्मित शिवलिंग अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण है जो घर में कुछ ऐसी किरणें बिखेरता है, जिससे सभी प्रकार से अनुकूलता प्राप्त होने लगती है।

श्रावण महीने के अवसर पर इस अद्भुत शिवलिंग के बारे में पत्रिका पाठकों को गौरव के साथ इस लेख के माध्यम से जानकारी दी जा रही है।

पारद शिवलिंग तो एक चमत्कार है, मानव जाति को एक वरदान है, क्योंकि पारे को स्वयं **'शिव'** कहा है और इस पारे से बद्ध यदि शिवलिंग का निर्माण किया जाय, और उसे घर में स्थापित किया जाय तो उसकी तुलना अन्य किसी भी देवी-देवता या यन्त्र आदि से हो ही नहीं सकती।

पारद को 'रस' 'शिव' 'स्वर्ण' रोगमुक्तिकरण, अजर, अमर, गगनचारी और रसेन्द्र कहा गया है, शास्त्रों में तो बताया गया है—

हृद्योगकर्णिकान्तःस्थं रसेन्द्रं परमेश्वरि।
स्मरन् विमुच्यते पापैः सद्यो जन्मान्तरर्जितैः।

अर्थात् जो मनुष्य पारद शिवलिंग का दर्शन करता है या उसका भक्तिभाव से स्मरण करता है, वह कई जन्मों के पापों से छूट जाता है और उसे परम पुण्य की प्राप्ति होती है।

'रस रत्नाकर' ग्रन्थ में पारद शिवलिंग के बारे में बताया है कि घर में पारद शिव को स्थापित करना और

उसके दर्शन करना सभी दृष्टियों से मनोकामनाओं की पूर्ति करना है, इस प्रकार के पारद शिवलिंग पर चढ़ाये गये जल को जो व्यक्ति ग्रहण करता है वह समस्त दुःखों से मुक्त हो कर जीवन में उन सारी इच्छाओं की पूर्ति कर लेता है जो उसके मन में होती है, ऐसे व्यक्ति के समस्त रोग स्वतः समाप्त हो जाते हैं।

स्वयं भूलिंगसहस्त्रैर्यंतफलं सम्यगर्चनात्।
तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद्भरेत्॥

—रस रत्नाकर

"रत्न चिन्तामणि" ग्रन्थ में बताया है कि जो व्यक्ति अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करता है और यदि केवल नित्य प्रातः उसके दर्शन ही करता है, तो भी उसके सारे पाप, दोष और दुःख समाप्त हो जाते हैं, उसका मन शान्त हो जाता है, और उसके घर में लक्ष्मी पूर्णता के साथ स्थापित हो जाती है।

लक्ष्मी का साक्षात् स्वरूप

यद्यपि पारद शिवलिंग को भगवान शिव का विग्रह माना है, परन्तु लक्ष्मी उपनिषद और अन्य ग्रन्थों में पारद शिवलिंग को लक्ष्मी का ही प्रतिरूप स्वीकार किया है क्योंकि स्वयं विष्णु ने कहा है कि जिसके घर में शिवलिंग स्थापित होता है, उसके घर में लक्ष्मी अवश्य ही अपनी सम्पूर्णता के साथ स्थापित होती है, और उसके जीवन में आर्थिक अभाव रह ही नहीं सकता।

"रसराज-समुच्चय" ग्रन्थ में पारद शिवलिंग को तन्त्र कहा गया है, उसके अनुसार यदि कोई व्यक्ति अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर लेता है, तो यदि घर पर दुकान पर व्यक्ति पर या परिवार पर किसी प्रकार का कोई तांत्रिक प्रयोग होता है, तो वह अवश्य ही समाप्त हो जाता है क्योंकि पारद शिवलिंग से स्वतः ऐसी किरणें निकलती हैं जो घर के अनिष्ट करने वाले तन्त्र को समाप्त कर देती हैं, फलस्वरूप वह घर सभी दृष्टियों से सुखी और सम्पन्नता की ओर अग्रसर होने लगता है।

'रसेन्द्र कल्प' ग्रन्थ में स्पष्ट रूप से कहा है—

स्वयंभूलिंगसाहस्त्रैर्यत्फलं सम्यगर्चनात्।
तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाद्भवेत्॥

अर्थात् संसार के हजारों शिवलिंग की पूजा करने से मनुष्य को जो फल प्राप्त होता है, उससे भी करोड़ों गुना फल पारद शिवलिंग की पूजा करने से प्राप्त होता है, अतः प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह जैसे भी हो पारद शिवलिंग प्राप्त करें और अपने घर में स्थापित कर उसके दर्शन करके जीवन का सौभाग्य प्राप्त करें, क्योंकि इसका दर्शन करना ही जीवन का सौभाग्य माना जाता है।

यदि पारद शिवलिंग के बारे में जो कुछ शास्त्रों में प्रकाशित है उसे लिखा जाय तो एक पूरा ग्रन्थ बन जाता है, यही नहीं अपितु पश्चिम के वैज्ञानिकों ने भी यह स्वीकार किया है कि वास्तव में ही पारद की गोली, बंधे हुए पारद या पारद शिवलिंग में से कुछ ऐसी किरणें निकलती रहती हैं, जो जीवन के अभाव, जीवन की बाधाएं और जीवन की समस्याओं को दूर करने में सहायक होती हैं।

रोगों को मिटाने और सभी दृष्टियों से व्यक्ति को पूर्ण स्वस्थ और निरोगी बनाने में तो पारद शिवलिंग और उस पर चढ़ाया हुआ जल अपने आप में ही आश्चर्यजनक है।

श्रावण मास और पारद शिवलिंग

शास्त्रों के अनुसार—जो श्रावण मास में अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करता है और उस पर नित्य जल चढ़ाता है वह हाथों हाथ चमत्कार अनुभव कर सकता है।

इस वर्ष श्रावण मास २७-७-९१ को प्रारम्भ हो रहा है, इसलिए साधक पहले से ही पारद शिवलिंग को प्राप्त कर लें और फिर विधिवत श्रावण कृष्ण पक्ष प्रतिपदा अर्थात् २७ जुलाई ९१ या श्रावण कृष्ण पंचमी अर्थात् ३१ जुलाई १९९१ को पूरे विधि-विधान के साथ अपने घर में पूजा स्थान में अथवा पवित्र स्थान में स्थापित कर दें।

पारद शिवलिंग रचना

'धरणीधर संहिता' में पारद शिवलिंग के निर्माण के बारे में बताया है कि पारद के आठ संस्कार कर उसे स्वर्ण के ग्रास से और फिर पारद को घी ग्वार, चित्रक, कटेरी की जड़, त्रिफला, सरसों, राई और हल्दी का काढ़ा बना कर इसमें पारद को खरल करना चाहिए, और उससे जो श्रेष्ठ पारद प्राप्त हो, उसे कांजी से धो कर कपड़े से पौंछ कर पारद को प्राप्त कर लें फिर पुनः इसे स्वर्ण ग्रास दें और बेल पत्र तथा बिल्व पत्र के रस में घोटें, इस प्रकार जो पारद प्राप्त हो उससे पारद शिवलिंग का निर्माण करें।

वस्तुतः ऐसे शिवलिंग से ही जीवन में पूर्ण सफलता और सिद्धि प्राप्त हो सकती है, क्योंकि ऐसा पारद पूर्णतः मल रहित, शुद्ध स्वच्छ और दिव्य होता है।

फिर अपने घर के पूजा स्थान में ईशान कोण में शुभ मुहूर्त देख कर **(जो कि इस वर्ष २७ जुलाई और ३१ जुलाई को सम्पन्न हो रहा है)** ऐसे शिवलिंग को स्थापित करें।

पांच तोले से भी बड़ा सिद्धि दायक पारद शिवलिंग

पत्रिका ने अपने साधकों की सुरक्षा और उनकी उन्नति, उनकी सफलता और उनकी सिद्धि को ध्यान में रख कर पांच तोले से भी ज्यादा वजन के आश्चर्यजनक शिवलिंग का निर्माण किया है, जो कि उपरोक्त तरीकों से आठों संस्कार सम्पन्न है, यह शिवलिंग अपने आप में ही दर्शनीय है, और पारद के ठोस होने की वजह से यह शिवलिंग टूटता या बिखरता नहीं, इस प्रकार के दुर्लभ, मन्त्रसिद्ध शिवलिंग बहुत ही कम तैयार कर पाये हैं, क्योंकि ऐसे शिवलिंग के निर्माण में काफी परिश्रम और समय व्यय होता है, परन्तु फिर भी पाठकों के आग्रह और साधकों की इच्छाओं को ध्यान में रख कर ऐसे शिवलिंग का निर्माण किया है जो मन्त्र-सिद्ध प्राणश्चेतना युक्त है।

इस प्रकार के पारद शिवलिंग पर व्यय ६००)रु० से भी ज्यादा आ जाता है, परन्तु फिर भी हमने इसी न्यौछावर में साधकों को इस प्रकार का पारद शिवलिंग देने का निश्चय किया है।

संतुष्टि

पारद शिवलिंग प्राप्त करने के बाद भी यदि आपको यह शिवलिंग पसन्द नहीं आवे तो भेजने की तारीख से दस दिन के भीतर-भीतर इस पारद शिवलिंग को वापिस लौटा सकते हैं, हम आपको इससे सम्बन्धित पूरी धनराशि लौटाने का वायदा करते हैं—यह आपकी संतुष्टि के लिए हमारी तरफ से दिया हुआ आश्वासन और संतुष्टि है।

स्वर्णिम योजना

पत्रिका का उद्देश्य साधकों को ज्यादा से ज्यादा सहयोग देना है, और हम आपके लिए एक स्वर्णिम योजना प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे आप यह दुर्लभ शिवलिंग सर्वथा मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं।

आगे की पंक्तियों में प्रपत्र प्रकाशित किया जा रहा है, आप इसे अलग कागज पर उतार कर हमें भिजवा दें, हम आपको ५७५)रु० तथा २५)रु० डाक व्यय जोड़ कर

६००)रु० की वी०पी० से यह दुर्लभ पारद शिवलिंग वी०पी० से भिजवा देंगें।

जब पोस्टमैन इससे सम्बन्धित पैकेट ले कर आपके पास आवे तब आप उसे धनराशि दे कर यह पैकेट छुड़वा लें, इस प्रकार आप सुरक्षित रूप से यह पारद शिवलिंग प्राप्त कर सकेंगे और आप द्वारा भेजी गई धनराशि से हम आपको १९९२ से आगे पांच वर्षों के लिए पंचवर्षीय सदस्यता शुल्क जमा कर आपको सम्बन्धित रसीद भिजवा देंगे।

इससे आप अगले पांच वर्षों तक हर साल पत्रिका शुल्क भेजने के झंझट से मुक्त हो सकेंगे और इस प्रकार यह पारद शिवलिंग भी आप आसानी से प्राप्त कर लेंगे, यह पंचवर्षीय सदस्यता शुल्क अगले पांच वर्षों तक लौटाया नहीं जा सकेगा पर आपको पांच वर्षों तक नियमित रूप से पत्रिका अवश्य ही भेजते रहेंगे।

रियायत

यह रियायत केवल भारतवर्ष में रहने वाले पत्रिका सदस्यों को ही प्राप्त होगी और इस पत्रिका प्राप्ति के एक महीने के भीतर-भीतर आपका प्रपत्र आने पर ही यह पारद शिवलिंग भेजने की व्यवस्था हो सकेगी।

जैसा कि मैंने बताया कि इस प्रकार के पारद शिवलिंग अत्यन्त ही कम निर्मित हो सके हैं, अतः जो पहले प्रपत्र की प्रतिलिपि बना कर भेजेगा उसे ही पारद शिवलिंग भेजने की व्यवस्था हो सकेगी।

हमारे पास पारद शिवलिंग समाप्त हो जाने पर बाद में इस प्रकार के आने वाले प्रपत्रों पर विचार करना संभव नहीं हो सकेगा।

वस्तुतः पारद शिवलिंग अपने आप में अद्वितीय शिवलिंग है, जिसे साधक अपने घर में पूजा स्थान में, मन्दिर में या दुकान पर स्थापित कर सकता है, साधक चाहे तो इस प्रकार के दुर्लभ पारद शिवलिंग को अपने मित्र, स्वजन, दूर रहने वाले पुत्र, पुत्री या रिश्तेदार को इस अवसर पर भेंट भी कर सकते हैं।

जो जीवन में सौभाग्यशाली हैं, जीवन में जिनका पुण्य उदय होता है, वे ही आलस्य छोड़ कर इस प्रकार का शिवलिंग प्राप्त करने में सफल हो पाते हैं, जो कि आने वाली पीढ़ियों तक के लिए अनुकूल, सुखदायक और सौभाग्यवृद्धि में सहायक बना रहता है।

प्रपत्र

मैं पत्रिका का सदस्य हूं, इसलिए मुझे पारद शिवलिंग प्राप्त करने का अधिकार है, कृपया मुझे ६००)रु० की वी०पी० से पारद शिवलिंग भिजवा दें, वी०पी० आने पर मैं छुड़ा लूंगा और आपको धनराशि प्राप्त होने पर आप मुझे अगले पांच वर्षों के लिए पंचवर्षीय पत्रिका सदस्य बना दें।

मेरा नाम...सदस्यता संख्या......................

मेरा पूरा पता...

....

हिमालय की दुर्गम यात्राएं
तो
सूक्ष्म शरीर से ही संभव है

मुझे जोधपुर से टेलिग्राम के जरिये सूचना मिली थी, कि मैं एक-दो दिन के लिए जोधपुर आऊं और पूज्य गुरुदेव डॉ० श्रीमाली जी का साधनात्मक इन्टरव्यू तैयार करूं, पर मैं पसोपेश में थी कि इतने बड़े व्यक्तित्व का मैं कैसे इन्टरव्यू कर पाऊंगी, इससे पहले मैं दो बार जोधपुर जा चुकी हूं, और दोनों ही बार थोड़े-थोड़े समय के लिए पूज्य गुरुदेव से मिलना हुआ है, अत्यधिक व्यस्तता के कारण वे ज्यादा समय तो नहीं दे पाये, परन्तु उन थोड़े से क्षणों में मैंने यह अनुभव किया, कि वे अत्यन्त शान्त और सरल व्यक्तित्व हैं, वे उस अखरोट की तरह हैं, जो ऊपर से अत्यन्त कठोर होता है, जिसे भेद पाना सरल नहीं होता, पर यदि कोई ऊपर के कठोर आवरण को हटा कर अन्दर झांकने का प्रयत्न करे, तो उसे सुस्वादु और मधुर फल प्राप्त हो जाता है।

दूसरी बार भी मुझे कुछ ऐसा ही आभास हुआ, उनका जन्मदिन समारोह था, और मेरी पत्रकारिता अन्दर ही अन्दर कुलबुला रही थी, कि मैं उनका एक इन्टरव्यू प्राप्त करूं, और उन प्रश्नों के उत्तर जानूं, जो प्रश्न गूढ़ हैं, और जो अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाये हैं।

पर जब टेलिग्राम मिला उस समय मैं गंगोत्री और उससे आगे के क्षेत्र गोमुख की यात्रा का कार्यक्रम बना चुकी थी, दूसरे ही दिन मुझे गोमुख के लिए रवाना होना था, अब इतना समय भी नहीं बचा था, कि मैं पहले जोधपुर जाऊं, और इन्टरव्यू करके अपनी यात्रा करूं, मैंने निर्णय यही लिया कि फिलहाल जो यात्रा कार्यक्रम है, मैं उसी को सम्पन्न कर लूं, इस यात्रा में मैं उन योगियों और संन्यासियों से मिलना चाहती थी, जो प्रकाश में नहीं आ सके हैं, जो जन सम्पर्क से दूर हैं, और जो वास्तव में ही सिद्धि पुरुष हैं, यद्यपि मैं असमंजस में थी, कि कोई ऐसा योगी या संन्यासी मिल भी पायेगा या नहीं, परन्तु प्रयत्न करने में क्या हर्ज है, इसी धारणा को लेकर मैं इस यात्रा पर निकल रही थी।

मैं ऋषिकेश होते हुए, गंगोत्री तक पहुंची, यह स्थान धार्मिक और प्रकृति दोनों ही दृष्टियों से अद्वितीय है, गंगा जितनी वेग से यहां पर नीचे उतरती है, वह अपने आप में अत्यन्त भव्य और दर्शनीय दृश्य है, यहां पर **"स्वामी कृष्णानन्द जी"** मुझे मिले, जो भागीरथ शिला के पास ही एक छोटी सी कुटिया में रहते हैं, उन्होंने कैमरे के माध्यम से हिमालय के जितने सुन्दर और अद्वितीय चित्र

उतारे हैं, वे विश्व में दुर्लभ हैं, एक-एक चित्र बोलता हुआ सा है, उन्होंने बत्तीस बार गोमुख से आगे 'काकभुसण्डी' आश्रम तक यात्रा की है ।

अभी तक तो मेरा मानस गोमुख तक जाने का था, पर जब उन्होंने बताया कि यदि वास्तव में ही प्रकृति को देखना है, यदि वास्तव में ही योगी या संन्यासी से मिलना है, तो मन में थोड़ी हिम्मत संजोनी पड़ेगी, और यदि गोमुख से आगे काकभुसण्डी आश्रम तक पहुंच गई, तो अवश्य ही किसी सिद्ध योगी या संन्यासी के दर्शन हो जायेंगे ।

गंगोत्री तक तो बसें आती हैं, और एक प्रकार से यह भाग "कमर्शियल" बन गया है, इसके आगे अधिकतर पैदल रास्ता है, मेरे पास तो दो कैमरे और छोटा-मोटा सामान था, मैंने काफी कुछ सामान तो कृष्णानन्द जी के पास रख दिया और गोमुख तक की यात्रा प्रारम्भ कर दी ।

इस पूरे क्षेत्र में प्रकृति का साम्राज्य छाया हुआ है, मैं गंगोत्री से आगे चीड़वासा और उससे आगे भोजवासा होते हुए शाम तक **लाल बाबा आश्रम** में पहुंच गई थी, यह छोटा सा आश्रम यात्रियों के लिए अत्यन्त सुखदायक है, यहां पर प्रत्येक आने वाले यात्री को गरम-गरम खिचड़ी और रात को ओढ़ने को कम्बल मिल जाते हैं, मैंने यह रात यहीं पर व्यतीत की ।

दूसरे दिन जब मैं सुबह उठकर स्नान कर आगे के लिए तैयार हुई, तो एक अत्यन्त भव्य और तेजस्वी सन्यासी दिखाई दिया, जिसकी उम्र लगभग ५० से ६० के बीच में थी, लाल बाबा ने बताया कि ये **"स्वामी हरिहरानन्द जी"** हैं, और गोमुख से आगे काकभुसण्डी आश्रम की ओर जा रहे हैं, इस क्षेत्र का चप्पा-चप्पा इनका देखा हुआ है यहां के साधु-संन्यासी इन्हें अत्यन्त आदर और सम्मान के साथ देखते हैं ।

मुझे वे संन्यासी अत्यन्त भव्य और सम्माननीय प्रतीत हुए, वे उस ओर ही जा रहे थे, जिधर मेरा गन्तव्य था, लाल बाबा आश्रम से आगे, नहीं के बराबर रास्ता है, यदि आपके साथ कोई गाइड या मार्गदर्शक नहीं हो तो गोमुख तक पहुंचना संभव प्रतीत नहीं होता, पत्थरों के बीच छोटी-मोटी पगडंडियां हैं, जिनके सहारे ही आगे जाना होता है, यह मेरा सौभाग्य था कि मेरे साथ स्वामी हरिहरानन्द जी थे, जिन्हें इस रास्ते का पूरा-पूरा ज्ञान था ।

लगभग ११ बजे हम गोमुख तक पहुंच गये, यह स्थान अपने आप में अत्यन्त भव्य है, बर्फ से ही पानी, सूर्य की गर्मी से बन कर गंगा की धारा बनती है, यह दृश्य वास्तव में ही देखते बनता है, यद्यपि यहां मौसम प्रत्येक क्षण अपना रंग बदल देता है, परन्तु इस स्थान के आस-पास कई साधु-संन्यासी देखने को मिल जाते हैं, पर मैं इन साधु-संन्यासियों के चक्कर में फंसना नहीं चाहती थी, मैं तो किसी ऐसे योगी या संन्यासी की तलाश में थी, जो वास्तव में ही सिद्धियों के क्षेत्र में अद्वितीय हो, जिनके पास साधना और तपस्या का बल हो ।

मैंने मार्ग में स्वामी हरिहरानन्द जी से अपनी इच्छा प्रकट कर दी थी, तो उन्होंने समझाते हुए कहा था, कि गोमुख तक की तो मैं बात नहीं कहता, पर उससे ऊपर जाने पर ऐसे कई सिद्ध योगी मिल जायेंगे, जो अपने आप में अद्वितीय हैं, और जिनके पास साधना की शक्ति और बल है ।

यहां से आगे का रास्ता बर्फ का रास्ता है, घुटने तक पैर बर्फ में धंस जाते हैं, जमीन नहीं के बराबर है, परन्तु इसके बावजूद भी प्रकृति की कुछ ऐसी विशेषता है, कि यहां बर्फ में ही कई ऐसी वनस्पतियां उगी हुई हैं, जिनसे रात्रि को प्रकाश होता रहता है, यही नहीं अपितु कुछ वनस्पतियां ऐसी भी हैं, जिनके पत्ते तोड़ कर चबा लेने से सर्दी का कोई प्रभाव महसूस नहीं होता, मैंने अपने जीवन में पहली बार ऐसी चमत्कारिक वनस्पतियां देखीं, जो पूरी रात चमकती रहती हैं, और जिनका प्रकाश दूर-दूर तक बना रहता है ।

स्वामी हरिहरानन्द जी को इस तरफ के रास्तों का पूरा-पूरा ज्ञान था, यद्यपि यहां सर्दी जरूरत से ज्यादा थी, और मैं चलते हुए भी अन्दर तक कांप जाती थी, परन्तु उस पौधे की पत्तियां चबा लेने से मैंने काफी राहत महसूस की, और अपने बदन में गर्मी का अहसास भी किया, इस रास्ते पर कई संन्यासी विचरण करते हुए दिखाई दे रहे थे, नंगे बदन और नंगे पांव, वे उतनी ही सुविधा से आ-जा रहे थे, जितनी सुविधा से कोई संन्यासी मैदानी भाग में सड़क पर चल रहा हो।

यहीं पर स्वामी जी ने मुझे एक विश्वा नामक पौधे के बारे में भी बताया, जिनकी पत्तियां थोड़ी लम्बी और नुकीली होती हैं, इन पत्तियों को चबा लेने से आगामी आठ-दस दिनों तक व्यक्ति को न भूख लगती है और न प्यास का अहसास होता है, इस प्रकार के पौधे इस तरफ बहुत हैं, पर जिन्हें जानकारी होती है, वे ही इस प्रकार के पौधों का उपयोग कर सकते हैं।

शाम तक हम काकभुसण्डी आश्रम तक पहुंच गये थे, यहां पर नदी तिब्बत की ओर से बहती हुई आती है, इसका पानी इतना स्वच्छ और निर्मल होता है कि देखते ही मोती की आभा प्रतीत होती है, यही नदी आगे बहती हुई गोमुख में गंगा का रूप धारण कर लेती है।

इसी के किनारे यह काकभुसण्डी आश्रम है, यहां बर्फ से बने हुए पांच छः कमरे हैं, ऊपर से बर्फ बहुत ठंडी प्रतीत होती है, पर अन्दर से ये गुफाएं अत्यन्त गर्म और सुखदायक अनुभव होती हैं, प्रकृति ने इन गुफाओं की रचना इस प्रकार से की है, कि जैसे ये बड़े-बड़े कमरे या ड्राइंग रूम हों, नीचे यहां की एक विशेष घास बिछी हुई है, जिससे सर्दी का अहसास ही नहीं होता, चारों तरफ शान्ति और आनन्द की अनुभूति होती रहती है।

जो वास्तव में ही प्रकृति को देखना चाहते हैं, वास्तव में ही भारतवर्ष को जानना चाहते हैं, उन्हें प्रयत्न कर के इस आश्रम तक अवश्य आना चाहिए, यह स्थान गोमुख से लगभग ११-१२ किलोमीटर आगे है, इसके संचालक **'स्वामी अद्वैतानन्द जी'** हैं, जो वास्तव में ही सिद्ध योगी हैं, इनकी उम्र लगभग ६०-७० वर्ष की प्रतीत होती है, परन्तु इनके शिष्यों से बातचीत करने पर यही सुनाई दिया कि स्वामी अद्वैतानन्द जी पिछले चार सौ वर्षों से यहां पर हैं, आश्रम के बाहर बड़े-बड़े अक्षरों में **'निखिलेश्वरानन्द आश्रम'** लिखा हुआ है, और नीचे ही छोटे अक्षरों में काकभुसण्डी स्थल लिखा हुआ है, पेड़ के तने पर यह लिखा हुआ अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होता है, यहां पर प्रत्येक आने वाले व्यक्ति को दूध और खिचड़ी खाने के लिए दी जाती है, यद्यपि गुफाओं के अन्दर सर्दी अनुभव नहीं होती फिर भी कम्बलों की व्यवस्था है।

मैंने अपने जीवन में भारत का काफी भ्रमण किया है, परन्तु जो शान्ति, जो आनन्द मुझे यहां आने पर प्रतीत हुआ, वह विश्व में और कहीं पर भी अनुभव नहीं हुआ, वास्तव में ही यहां तपस्या की गरिमा है, लगभग दस-बारह शिष्य हैं जो यहीं पर रहते हैं और साधना के क्षेत्र में निरन्तर अग्रसर हैं।

उस रात्रि को तो मैंने एक अलग कमरे में विश्राम किया, सुबह पास में ही बहने वाली **'देव गंगा'** में स्नान करने का निश्चय किया, परन्तु पानी इतना अधिक शीतल था कि पानी में उतरने की हिम्मत नहीं हुई, फिर भी मैंने हाथ-पैर, मुंह धोया और एक डुबकी लगा ही ली, मुझे वास्तव में ही इस देव गंगा में स्नान करने का जो सुखद अनुभव हुआ, उसे शब्दों में नहीं लिखा जा सकता।

जब मैं तैयार हो कर आश्रम की ओर पहुंची, तो एक तरफ स्वामी अद्वैतानन्द जी बैठे दिखाई दिये, नीचे व्याघ्र चर्म बिछा हुआ था, और उस पर बैठे हुए स्वामी अद्वैतानन्द जी ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानों कोई देवदूत पृथ्वी पर उतर आया हो।

मैं उनसे अनुमति ले कर उनके पास ही बैठने को उद्यत हुई, तो उन्होंने पास में ही रखे हुए एक मृग चर्म को मेरी ओर बढ़ा दिया, उसे बिछा कर मैं एक तरफ

उनके सामने ही बैठ गई ।

चारों तरफ प्रकृति अपूर्व छटा के साथ विद्यमान थी, पास में ही देवगंगा प्रवहित हो रही थी, सूर्य की मधुर किरणें चारों तरफ आनन्द दायक ऊष्णता प्रदान कर रही थीं, और जो शान्ति, जो आनन्द मुझे देखने को मिला, अनुभव हुआ, वह वास्तव में ही जीवन का सौभाग्य कहा जा सकता है ।

मैंने अपना परिचय दिया, और बताया कि मूलतः मैं पत्रकार हूं, पर यहां आने पर मेरी पत्रकारिता समाप्त सी हो गयी है, और आध्यात्मिकता उदित हो रही है ।

मैंने पूछा कि इस स्थान को काकभुसण्डी स्थान कहा जाता है, फिर इसका नाम **निखिलेश्वरानन्द आश्रम** क्यों लिखा हुआ है ?

उन्होंने अत्यन्त करुणा-युक्त नेत्र ऊपर उठाये और बोले **परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी** यहां पर कई वर्षों तक रहे हैं, वे मेरे गुरु भाई हैं, यद्यपि वे मुझसे ज्येष्ठ हैं और अब गृहस्थ जीवन में रह कर सिद्धाश्रम के उसी कार्य को सम्पादित कर रहे हैं, जो कि मैं यहां रह कर इन साधकों को साधनाएं संपन्न करवा कर कर रहा हूं ।

मेरी जिज्ञासा और बढ़ गयी, और मुझे टेलिग्राम का स्मरण हो आया, जिसमें मुझे गुरुदेव श्रीमाली जी का इन्टरव्यू करना था, मैंने शालीनता से पूछा—आप उनके साथ कितने वर्षों तक रहे ?

उन्होंने बताया कि लगभग छः सात वर्षों तक मैं उनके साथ ही रहा और उनसे कई साधनाएं एवं सिद्धियां प्राप्त कीं, इस आश्रम का जो वर्तमान स्वरूप है, यह उनके ही प्रयत्नों से है, यहां पर जो भोजन-व्यवस्था है, उनका नियमन भी उनके बताये हुए तरीके से ही सम्पन्न हो रहा है, फिलहाल वे जोधपुर में हैं, तीन वर्ष पहले जब मैंने उन्हें वापिस इस आश्रम में देखा था, तब हम सब संन्यासी और योगी रोमांचित हो उठे थे ।

यों वे सूक्ष्म शरीर से तो कई बार आते ही हैं, और मार्गदर्शन करते रहते हैं, कल भी वे लगभग दो घंटे यहां व्यतीत कर के गये हैं ।

मैंने पूछा कि जब वे सूक्ष्म शरीर से आते हैं तो क्या उनका पूरा शरीर विद्यमान अनुभव होता है ?

उन्होंने उत्तर दिया कि सूक्ष्म शरीर से तो केवल यात्रा होती है, अपने गन्तव्य स्थल पर जा कर वे अपने पूरे स्वरूप में आ जाते हैं, उन्हें देख कर, मिल कर या स्पर्श कर ऐसा ही प्रतीत होता है, जैसे हम जोधपुर में ही उनसे मिल रहे हों ।

मैंने पूछा कि वे यहां कब आते हैं ? यदि हम जोधपुर में हों या उनके सम्पर्क में हों तो कैसे प्रतीत हो कि वे इस स्थान पर या किसी अन्य स्थान पर सूक्ष्म शरीर से गये हुए हैं ?

उन्होंने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, यदि तुम प्रातःकाल जब वे स्नान कर बाहर आते हैं, उस समय उन्हें देखो तो प्रतीत होगा, कि उन्होंने एक-दो मिनट के लिए आंखे बन्द कर ली हैं, और कुछ सोच रहे हैं, पर उस समय वे सोच रहे नहीं होते, अपितु सूक्ष्म शरीर से इस स्थल की यात्रा कर रहे होते हैं, इसके बाद वे पुनः एक शरीर से उस कमरे में बैठे हुए प्रतीत होंगे, पर दूसरे शरीर से वे किसी और अन्य स्थान पर भी विचरण कर रहे होते हैं ।

सुबह के बाद वे दिन में भी कई बार ऐसी क्रिया करते रहते हैं, जब वे अपनी दोनों उंगलियों से अपनी आंखों के कोरों को दबा कर कुछ सोचते हुए से प्रतीत होते हैं, तो समझ लेना चाहिए कि वे अन्य स्थान या दृश्य को देख रहे हैं, अथवा सूक्ष्म शरीर से कहीं विचरण कर रहे हैं ।

मैंने पूछा कि मैं उनसे मिल चुकी हूं, पर वे अत्यन्त सामान्य व्यक्ति से प्रतीत होते हैं ।

उन्होंने उत्तर दिया, कि यह तुम्हारी न्यूनता अथवा उनकी अति मानवीयता है, जो आडम्बर और प्रदर्शन से सर्वथा दूर, अत्यन्त सरल और सामान्य प्रतीत होते हैं।

उन्होंने संन्यासी और योगी की धारणाओं को बदल दिया है, उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है, कि योगी या संन्यासी के लिए भगवे।कपड़े पहनना अनिवार्य नहीं है, सफेद सामान्य धोती कुरता पहिन कर भी संन्यासी बना रह सकता है।

वे क्या हैं और कितनी असीम सिद्धियों के ज्ञाता हैं–इसका उत्तर तो कोई पहुंचा हुआ संन्यासी या योगी ही दे सकता है, सामान्य सांसारिक व्यक्ति तो उन्हें या उनके स्वरूप को पहिचान ही नहीं सकता, उनका यह स्वभाव है कि वे सामान्यतः माया का आवरण अपने और शिष्य के बीच बनाये रखते हैं, ज्यों ही कोई शिष्य या परिचित इस आवरण को भेद कर उनके ब्रह्ममय स्वरूप को देखने का प्रयत्न करता है, त्यों ही वे अपने आपको सिकोड़ लेते हैं, और मुस्कराहट के साथ माया का ऐसा आवरण बिछा देते हैं, कि सामने वाला उसी में उलझ कर रह जाता है।

मैंने पूछा जब सुबह स्नान करने के बाद कुछ क्षणों के लिए वे ध्यान-चिन्तन युक्त हो कर सूक्ष्म शरीर से यात्रा कर रहे होते हैं, तब क्या उनके साथ बैठा हुआ कोई व्यक्ति साधक या साधिका उनके साथ ही सूक्ष्म शरीर से यात्रा कर सकता है, और क्या वे जहां तक कुछ समय के लिए जाते हैं, वहां तक शिष्य उनके साथ जा सकता है ?

उन्होंने उत्तर दिया ऐसा होता भी है, यदि वे चाहें तो अपने साथ किसी भी शिष्य या साधक को सूक्ष्म शरीर से यात्रा करवा सकते हैं, यहां पर भी कई बार उनके साथ साधक या शिष्य दिखाई दिये हैं, जिनके साथ वे सूक्ष्म शरीर से आये थे।

मैंने पूछा, आप तो उनके गुरु भाई हैं, उनके बारे में आपकी क्या राय है ?

उन्होंने उत्तर दिया–उनके जैसा व्यक्तित्व पिछले कई हजार वर्षों में उत्पन्न नहीं हुआ, यह वर्तमान शताब्दी का सौभाग्य है, कि वे हमारे बीच हैं, साधना-सिद्धियों और ब्रह्ममयता के क्षेत्र में वे अद्वितीय हैं, और अगले पांच हजार वर्षों तक भी उनकी कोई समानता नहीं कर पायेगा।

मैंने पूछा कि मैं उनसे कई बार मिली हूं, मैंने अनुभव किया है कि वे बात करते-करते कहीं खो जाते हैं, और जब कुछ क्षणों के बाद सामने वाले को देखते हैं, तब स्पष्ट अनुभव हो जाता है कि उन्होंने कोई बात सुनी नहीं, या उस क्षण वे कहीं और थे।

उन्होंने बताया कि मैं उन्हें भली प्रकार से जानता हूं, ऐसे क्षणों में वे किसी अन्य स्थान को देख रहे होते हैं, या किसी दुर्गम हिमालय के स्थान पर किसी को मार्ग-दर्शन दे रहे होते हैं, इसीलिए कुछ क्षणों के लिए वे वर्तमान वातावरण से कट जाते हैं, पर वे एक साथ कई शरीरों में बन कर कई स्थानों पर यात्रा करने में समर्थ हैं।

उन्होंने रहस्योद्घाटन करते हुए बताया कि जब वे सुबह स्नान कर बाहर आ जांय तब वे सामान्यतः चरण स्पर्श या शरीर स्पर्श नहीं करने देते, पर उस समय यदि शरीर स्पर्श करने में कोई समर्थ हो जाता है, तो उसके दिव्य नेत्र स्वतः ही जाग्रत होने की संभावना बन जाती है, और ऐसा भी क्षण आ सकता है, कि उनके साथ सूक्ष्म शरीर से यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाय।

और जिसे यह सौभाग्य प्राप्त होता है, वह वास्तव में ही सौभाग्यशाली कहा जा सकता है, उनके साथ तो उन दुर्गम और गोपनीय स्थानों की भी यात्रा हो जाती है, जो अपने आप में ही महत्वपूर्ण हैं।

कहते-कहते वे उठ खड़े हुए, **स्वामी निखिलेश्वरानंद जी** की स्मृति में वे भाव विभोर हो उठे थे, उन्होंने अत्यन्त करुणा दृष्टि से मेरी ओर देखा और कहा वास्तव में ही तुम सौभाग्यशाली हो,— कहते-कहते वे आश्रम की ओर बढ़ गये।

उपनिषदों में

१०८ दीक्षाएं आवश्यक बताई हैं

पर इन में

सर्वश्रेष्ठ अद्वितीय और दुर्लभ दीक्षा बताई है

ब्रह्मवर्चस्व-दीक्षा

जिसे प्राप्त करने से व्यक्ति जो भी सोचता है, या जिस प्रकार से भी चाहता है, उस प्रकार से उसका कार्य सिद्ध हो जाता है, क्योंकि इस दीक्षा से "वचन सिद्धि" "संकल्प सिद्धि" और "कार्य सिद्धि" प्राप्त हो जाती है।

और यह दीक्षा आप घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं

ब्रह्मवर्चस्व दिवस (७ जुलाई १९९१ को)

कैसे प्राप्त करें

- आप लौटती डाक से ही पोस्टकार्ड या एक कागज पर हमें लिख भेजें कि आप ब्रह्मवर्चस्व दीक्षा प्राप्त करना चाहते हैं।
- पत्र में नीचे अपने एक मित्र या स्वजन का पूरा पता लिख भेजें, जिसे १९९१ का पत्रिका सदस्य बनाना है, और नीचे आप अपना पूरा पता लिख भेजें, जहां **"ब्रह्मवर्चस्व पैकेट"** सर्वथा **मुफ्त** में भेजना है।
- हम आपको १०५)रु० पत्रिका शुल्क तथा ९)डाक व्यय लगा कर **'ब्रह्मवर्चस्व पैकेट'** भिजवा देंगे, जो आपकी दीक्षा के लिये जरूरी है।
- जब पोस्टमैन आपके पास पैकेट लेकर आवे तब आप उसे प्राप्त कर लें, इस प्रकार **ब्रह्मवर्चस्व यन्त्र** आपको सर्वथा मुफ्त में प्राप्त हो जायेगा, और १०५)रु० मित्र के खाते में जमा कर पूरे वर्ष भर उसे पत्रिका भेजते रहेंगे।
- ब्रह्मवर्चस्व यंत्र आप ७ जुलाई को गले में धारण कर सुबह सात बजे पवित्र स्थान पर बैठ जांय, गुरुदेव यहीं से आपको इस दिन यह दुर्लभ दीक्षा प्रदान कर देंगे।

एक स्वर्णिम अवसर

जिसका उपयोग आपको करना है

सम्पर्क : **मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)**

जिसके हाथ में जितने ये दुर्लभ चिन्ह होते हैं, इसी से यह ज्ञात होता है कि वह व्यक्तित्व कितनी कला सम्पन्न व्यक्तित्व है, भगवान श्रीकृष्ण के हाथों में ये पूरे के पूरे सोलह चिन्ह थे, तभी वे सोलह कला पूर्ण, 'पूर्ण पुरुष' कहलाये।

और आज भी इन सोलह कलाओं से सम्पन्न व्यक्तित्व हमारे बीच है।

पूर्ण मदः पूर्ण मिदं

पंडित पीताम्बरदत्त शास्त्री काशी के उद्भट विद्वान और सिद्धि पुरुष हैं, इस समय उनकी उम्र लगभग ८६ को पार कर चुकी है, पर उनके चेहरे पर तेज और ओज वैसा ही है, जैसा एक सिद्धि पुरुष में होता है, काशी के विद्वानों में वे अत्यन्त सम्माननीय एवं पूजनीय हैं, हस्त रेखा शास्त्र एवं साधनाओं के क्षेत्र में उन्होंने जो कार्य किया है, वह एक पूरी संस्था भी मिल कर नहीं कर सकती, आज से कई वर्ष पहिले उन्होंने भगवान श्री कृष्ण की गीता पर एक भाष्य लिखा था, जिसका अनुवाद कई भाषाओं में हुआ और सभी विद्वानों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया, कि गीता पर इससे श्रेष्ठ भाष्य अभी तक नहीं लिखा गया, कई विद्वानों ने तो यहां तक लिखा, कि स्वयं श्री कृष्ण ने उनके प्राणों में उतर कर यह भाष्य लिखाया है।

पिछले दिनों उन्होंने एक और ग्रन्थ लिखा है, यद्यपि यह आकार में तो छोटा सा ही है, परन्तु अपने आप में यह इसलिए महत्वपूर्ण है, कि इस में एक नवीन तथ्य को भली प्रकार से स्पष्ट किया गया है, पीताम्बरदत्त जी कृष्ण पर जब कार्य कर रहे थे, तो लगभग तीन वर्ष उन्होंने उज्जैन में व्यतीत किये थे, वहीं पर उन्हें श्री कृष्ण के गुरु **महर्षि सांदीपन** द्वारा रचित एक ग्रन्थ देखने को मिला था, जो हस्त लिखित था, **जिसमें यह स्पष्ट किया था कि कोई भी मानव - पूर्ण और महामानव होता है, तो उसके हाथ की रेखाएं अपने आप सारे तथ्य स्पष्ट कर देती हैं।**

उस पुस्तक में भगवान श्रीकृष्ण की सोलह कलाओं का विवरण वर्णन स्पष्ट किया गया था, और सांदीपन ने अपने ज्ञान के बल पर यह रहस्य उजागर किया था कि भगवान श्रीकृष्ण को मैं तभी पहिचान गया था, जब वे शिक्षा प्राप्त करने के लिए मेरे आश्रम में आये थे, उनके हाथ में वे सोलह चिन्ह थे, जो एक-एक कला का प्रतिनिधित्व करते हैं, हाथ में इन सोलह चिन्हों में से जितने चिन्ह होते हैं, उनसे ही यह पता चल जाता है, कि यह बालक या व्यक्ति कितनी कलाओं से सम्पन्न है।

उस पुस्तक में महर्षि सांदीपन ने यह भी स्पष्ट किया था कि ऐसे चिन्ह लाखों-करोड़ों व्यक्तियों में से एक-दो व्यक्तियों के हाथों में ही देखने को मिलते हैं, सामान्यतः एक-आध चिन्ह भी व्यक्ति के हाथों में दिखाई नहीं देता, सामान्य व्यक्ति के हाथों में तो सीधी सरल रेखाएं होती

हैं, जिनसे ही उसके भाग्य का निर्धारण होता है, पर कुछ व्यक्तित्व ऐसे भी होते हैं जो युग को बदलने की सामर्थ्य रखते हैं, जो युग के अनुरूप नहीं चलते, अपितु युग उनके अनुरूप चलता है, कुछ लोगों के हाथों में इन सोलह चिन्हों में से एक-दो या चार-छः चिन्ह होते हैं, परन्तु सभी के सभी चिन्ह तो हजारों वर्षों बाद ही किसी व्यक्तित्व में देखने को मिलते हैं, यों छः चिन्हों से सम्पन्न या दूसरे शब्दों में छः कलाओं से सम्पन्न व्यक्ति भी युग पुरुष या महामानव कहलाने की स्थिति में आ जाता है, परन्तु जिसके हाथ में दस या बारह चिन्ह हों, वह तो अपने आप में अद्वितीय युग पुरुष ही कहला सकता है, हाथ के ये चिन्ह ही यह स्पष्ट करते हैं, कि व्यक्ति कितनी कलाओं से सम्पन्न है, सांदीपन ने आगे अपने हस्त लिखित ग्रन्थ में स्पष्ट किया है, कि मैंने कृष्ण के छोटे-छोटे हाथों में इन सभी चिन्हों को देखा है, और इसमें कोई दो राय नहीं कि आने वाले वर्षों में यह बालक समाज और देश को नेतृत्व दे सकेगा, और पीढ़ियां इसे युग पुरुष के रूप में हमेशा-हमेशा स्मरण करती रहेंगी।

पंडित पीताम्बरदत्त जी ने अपने पूरे जीवन में दो ही ग्रन्थ लिखे, एक तो उन्होंने आज से पच्चीस वर्ष पहले गीता पर भाष्य लिखा था, जो अपने आप में अद्वितीय कलाकृति है, और दूसरी पुस्तक अभी हाल ही में प्रकाशित हुई है, जिसका नाम **'पूर्ण मदः पूर्ण मिदं'** है।

मैं काशी विद्वत् परिषद की मिटिंग में गया था, और वहीं इस ग्रन्थ की चर्चा कई साधुओं और विद्वानों के मुंह से सुनी इसीलिए एक दिन समय निकाल कर मैं पंडित पीताम्बरदत्त जी के घर अनुमति लेकर जा पहुंचा, वास्तव में पंडितजी वृद्ध हो गये हैं, उनके शरीर से भी यह आभास प्रतीत होने लगा है, उनके पूजा स्थान में मुझे बैठने का अवसर मिला, क्योंकि मैं सुबह नौ बजे पहुंचा था और उस समय वे अपने पूजा स्थान में थे, जैसा कि पहले ही बता चुका हूं कि पूरे भारतवर्ष के पंडितों में पीताम्बरदत्त जी का नाम विद्वत्ता के क्षेत्र में अत्यन्त सम्मान के साथ लिया जाता है, यह मेरा सौभाग्य था कि मैं उन्हें पूजा करते हुए देखने का आनन्द प्राप्त कर सका।

लाल पीताम्बर पहने हुए, पीछे की ओर लम्बे बाल और दाढ़ी, तेजस्वी आंखें एवं कृश शरीर....सब मिल कर इस बात को स्पष्ट कर रहे थे, कि यह व्यक्तित्व निश्चय ह साधना-सम्पन्न एवं विद्वान है।

उनके पूजा स्थान में दो-तीन चित्र लगे हुए थे, नीचे भगवती काली और त्रिपुर सुन्दरी के चित्र भव्यता के साथ अंकित थे, ऊपर जो दो-तीन चित्र लगे हुए थे, उनमें से एक चित्र किसी बालक का सा था, जिसे मैं पहिचान नहीं पाया, मेरे पूछने पर उन्होंने जो बताया, वह मेरे लिए अत्यन्त प्रसन्नता का समाचार था।

पंडित पीताम्बरदत्त जी, **पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी** के बाल सखा हैं, और जब वे बालक थे, तब उनके साथ इन्हें रहने का अवसर प्राप्त हुआ था, मैं पूज्य गुरुदेव का संन्यासी शिष्य हूं ही, इसीलिए जब मुझे ज्ञात हुआ, कि पंडित जी पूज्य गुरुदेव की बाल्यावस्था में साथ रहे हैं, तो मेरे लिए प्रसन्नता स्वाभाविक ही थी, यह प्रसन्नता इसलिए भी थी, कि मुझे गुरुदेव की बाल्यावस्था का कुछ ज्ञान या जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

पंडित पीताम्बर दत्त जी को पूज्य गुरुदेव की हाथ की रेखाओं को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, और उनके हाथ की छाप उनके पास सुरक्षित है, यह ग्रन्थ **"पूर्ण मदः पूर्ण मिदं"** भी पूज्य गुरुदेव की हाथ की रेखाओं से सम्बन्धित ही है, इस पुस्तक में उन्होंने उनके हाथ की छाप भी प्रकाशित की है।

इस पुस्तक में उन्होंने प्रामाणिकता के साथ यह स्पष्ट किया है, कि पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी के हाथ की रेखाओं में वे सोलह के सोलह चिन्ह प्रामाणिकता के साथ विद्यमान हैं, जिनको सोलह कलाएं कहा जाता है, उन्होंने यह भी लिखा है, कि मैंने अपने जीवन में एक करोड़ से भी

ज्यादा हाथ देखे होंगे, परन्तु मुझे अन्य कोई भी हाथ ऐसा देखने को नहीं मिला, जिसमें ये सभी सोलह चिन्ह विद्यमान हों।

उन्होंने यह पूरी पुस्तक पूज्य श्रीमाली जी के हाथ की रेखाओं के स्पष्टीकरण के साथ प्रकाशित की है और प्रत्येक रेखा का विवरण विस्तार से स्पष्ट किया है, साथ ही उन सोलह चिन्हों का भी प्रामाणिकता के साथ वर्णन दिया है, जो सोलह कलाओं से सम्बन्धित हैं और पूज्य गुरुदेव के हाथों में ये चिन्ह प्रामाणिकता के साथ अंकित हैं।

यद्यपि यह ग्रन्थ काफी बड़ा है, पर मैं उन सोलह चिन्हों के नाम और संक्षिप्त में उनसे सम्बन्धित विवरण अकित कर रहा हूं, जो इस पुस्तक में प्रतिपादित किये हैं, इन चिन्हों को ही **सोलह कला चिन्ह** कहा जाता है।

१-कमल

इस ग्रन्थ के अनुसार—**नाल सहित अष्टदल कमल** का चिन्ह श्रीमाली जी के दाहिने हाथ के मध्य में प्रामाणिकता के साथ अंकित है, जीवन रेखा जहां से प्रारम्भ होती है, उसके आगे ही यह अद्वितीय चिन्ह है, जो **प्रथम** कला से सम्बन्धित महत्वपूर्ण चिन्ह है।

इस चिन्ह को **ब्रह्म चिन्ह** भी कहा गया है, यदि किसी व्यक्ति को यह सौभाग्यशाली चिन्ह जीवन में एक बार किसी के हाथ में देखने को ही मिल जाय तो भी उसके सारे पाप कट जाते हैं, और जीवन उन्नति की ओर ऊपर उठ जाता है।

इस चिन्ह का प्रभाव यह है, कि ऐसा व्यक्ति शुद्ध सात्विक, निर्मल, पवित्र होने के साथ-साथ एक अद्वितीय आत्मा होती है, जो पृथ्वी ग्रह पर समय पा कर अवतरित होती है, ऐसा व्यक्तित्व मन्त्र का अध्येता और सिद्धि-पुरुष होता है, जिसे पूर्णता के साथ वाक्-सिद्धि प्राप्त होती है।

२-आर्या

यह श्रीमाली जी के हाथ में उस स्थान पर अंकित है, जो सूर्य पर्वत के नीचे का भाग है, यों तो सूर्य पर्वत अपने आप में अत्यन्त विकसित और दर्शनीय है, परन्तु ठीक इस पर्वत के नीचे जिस प्रकार से **आर्या चिन्ह** अंकित हुआ है, वह अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

यह चिन्ह सूर्य के समान वृत्ताकार है, जिसके चारों ओर किरणें विकीर्ण हुई हैं, इस चिन्ह को दर्शनीय चिन्ह कहा गया है, जिसके हाथ में ऐसा चिन्ह होता है, वह अत्यन्त तेजस्वी, योग्य और विद्वान व्यक्तित्व होता है, जो अपने आप में समस्त वेदों का ज्ञाता और शास्त्रों का अध्येता होता है, और पूरा युग उनके ज्ञान से प्रभावित होता है, आने वाली पीढ़ियों के लिए ऐसा व्यक्ति उन ग्रन्थों की रचना कर के जाता है, जो युग के लिए पाथेय और मार्गदर्शक होती हैं।

यदि किसी के भाग्य में ऐसे चिन्ह के दर्शन ही हो जांय तो भी उसका जीवन संवर जाता है, और जीवन में वह जो भी इच्छा करता है, उसकी पूर्ति हो जाती है।

३-पाञ्चजन्य शंख

पूज्य गुरुदेव का शुक्र पर्वत सर्वाधिक विकसित और अपने आप में अद्वितीय है, दूर से ही यह पर्वत प्रकाशित होता हुआ सा प्रतीत होता है, इस पर्वत के ठीक नीचे यह पाञ्चजन्य शंख अंकित है, जो लाखों-करोड़ों व्यक्तियों में से किसी एक व्यक्ति के हाथ में होता है।

जिसके भी हाथ में ऐसा शंख अंकित होता है, उस व्यक्ति का पूरा जीवन मधुरता एवं आनन्द से व्यतीत होता है, दूसरों के साथ उसका व्यवहार अत्यन्त मधुर एवं सरल होता है, और वह व्यक्ति धर्म और विज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय कार्य सम्पन्न करता है।

सांदीपन के अनुसार—यदि किसी व्यक्ति को किसी के हाथ में यह चिन्ह देखने को ही मिल जाय, और वह ऐसे चिन्ह के दर्शन कर ले, तो भगवान विष्णु के दर्शन करने के समान ही शुभफल प्राप्त होता है।

४-त्रिगुरा

इसका आकार तीन पत्तियों के समान उठा हुआ पुष्प होता है, और शनि पर्वत के नीचे जहां भाग्य रेखा का उदय और प्रारम्भ होता है उसके मध्य में यह चिन्ह बनता है, अत्यन्त कम व्यक्तियों के हाथों में ऐसा श्रीचिन्ह अंकित होता है।

पंडित पीताम्बरदत्त जी के अनुसार—पूज्य श्रीमाली जी के हाथ में यह 'त्रिगुरा चिन्ह' प्रामाणिकता के साथ अंकित है, यह चिन्ह सत्व, रज, तथा तम तीनों गुणों से सम्बन्धित चिन्ह है दूसरे शब्दों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश और महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती से अनुरक्त चिन्ह माना गया है।

जिसके हाथ में यह चिन्ह होता है, वह समस्त सिद्धियों को प्राप्त करने वाला अत्यन्त तेजस्वी व्यक्तित्व होता है, सारे शास्त्र उसे स्वतः कंठस्थ होते हैं, मन्त्र बल से और साधनात्मक बल से वह प्रकृति में परिवर्तन लाने में समर्थ होता है, और जिस प्रकार से भी चाहे वह अपने साधनात्मक बल से सारी सृष्टि का सचालन और नियमन कर सकता है।

५-पुष्कल

चन्द्र पर्वत के नीचे छोटी-छोटी रेखाओं से मिल कर यह चिन्ह बनता है, जिसे देखने पर ऐसा आभास होता है, मानों द्वितीया का चन्द्र अपनी पूर्ण भव्यता के साथ उदय हुआ हो।

पूज्य श्रीमाली जी के दाहिने हाथ में चन्द्र पर्वत अत्यन्त विकसित लालिमा युक्त एवं आकर्षक है, इस चिन्ह का दर्शन ही अत्यन्त सौभाग्यशाली माना गया है, यह चिन्ह लक्ष्मी का प्रतीक है, और जिस व्यक्ति के भाग्य में ऐसे चिन्ह के दर्शन लिखे होते हैं, और यदि वह अपने जीवन में किसी के हाथ में अंकित इस चिन्ह को स्पर्श कर लेता है या दर्शन कर लेता है, वह निश्चय ही लक्ष्मी का प्रिय बन कर निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता है।

जिसके भी हाथ में यह चिन्ह होता है, वह पूर्ण पौरुष युक्त तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होता है, उसके व्यक्तित्व का प्रभाव दूसरों पर आसानी से पड़ता है, ऐसे व्यक्ति का परिचय और निकटता अत्यन्त भाग्य से प्राप्त होती है, क्योंकि ऐसा व्यक्ति पूरे जीवन में सहायक एवं सौभाग्य प्रदान करने में समर्थ होता है।

६-अनंग

अनंग का तात्पर्य कामदेव होता है, यह चिन्ह मानवाकृति के समान स्पष्ट होता है, जो शुक्र पर्वत और लघु मंगल पर्वत के बीच अंकित होता है, पर इसके लिए मंगल पर्वत भी अत्यन्त पुष्ट और विकसित होना आवश्यक है, पूज्य गुरुदेव के दाहिने हाथ में यह **अनंग चिन्ह** अत्यन्त भव्यता के साथ अंकित है, यदि सूक्ष्मता से इन दोनों पर्वतों के मध्य में देखें, तो पूर्ण मानवाकृति दिखाई देती है।

ऐसा व्यक्ति चुम्बकीय व्यक्तित्व सम्पन्न, पूर्ण पौरुषता युक्त एवं अद्वितीय बलशाली होता है, जो एक बार इनके सम्पर्क में आ जाता है, वह जीवन भर उससे जुड़ा रहता है, ऐसे व्यक्ति के हृदय में जोश, आनन्द, उत्साह तथा उमंग का समुद्र लहराता रहता है, जिसके हाथ में यह चिन्ह अंकित होता है उसे कायाकल्प का पूर्ण ज्ञान होता है, और समय-समय पर अपने व्यक्तित्व और पौरुषता को ज्यादा श्रेष्ठ, ज्यादा उन्नत और ज्यादा भव्य बनाये रखता है।

इस श्रीचिन्ह के दर्शन ही जीवन का सौभाग्य माना गया है, यदि किसी व्यक्ति के भाग्य में ऐसे श्रीचिन्ह के

दर्शन हों तो निश्चय ही वह रोग रहित एवं आनन्द युक्त जीवन व्यतीत करने में समर्थ होता है, जो ऐसे श्री चिन्ह के दर्शन या स्पर्श करने का सौभाग्य प्राप्त करता है, उसकी सुन्दरता अपने आप में ही अद्वितीय बनने लगती है।

७ गजलक्ष्मी

यदि हाथ में तीन मणिबन्ध हों और वहीं से प्रारम्भ हो कर भाग्य रेखा ऊपर की ओर उठ रही हो, तथा साथ ही जीवन रेखा के समापन स्थान पर गजलक्ष्मी का चिन्ह अंकित हो, तो उसे **गजलक्ष्मी चिन्ह** कहा जाता है।

पंडित पीताम्बर दत्त जी के अनुसार—पूज्य गुरुदेव के दोनों हाथों में यह **गजलक्ष्मी चिन्ह** पूर्णता के साथ अंकित है, यदि सामान्य दृष्टि से भी देखें, तो लक्ष्मी का स्वरूप और विग्रह साफ-साफ दिखाई देता है।

जिसके भी हाथ में ऐसा चिन्ह होता है, वह साधारण घराने में जन्म लेकर के भी अत्यन्त उच्च स्तरीय सम्मान, धन एवं सौभाग्य अर्जित करता है, आर्थिक एवं भौतिक दृष्टि से उनके जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

यदि किसी के हाथ में और विशेष कर दोनों हाथों में गजलक्ष्मी चिन्ह अंकित हो और उनके दर्शन का सौभाग्य जिसे भी प्राप्त हो, वह वास्तव में ही सौभाग्य शाली होता है, और मात्र दर्शन करने से ही उसकी दरिद्रता समाप्त हो जाती है और उसी क्षण से वह आर्थिक दृष्टि से समृद्ध और उन्नति की ओर अग्रसर हो जाता जाता है, शास्त्रों के अनुसार-यह सातवीं कला से सम्बन्धित चिन्ह है जो अत्यन्त सौभाग्यदायक माना गया है।

८-अतुल्या

दाहिने हाथ में विकसित बुध पर्वत के नीचे यह चिन्ह अंकित होता है, जो छोटे-छोटे सात चिन्हों से मिल कर बनता है, ऐसा लगता है कि जैसे सात सूर्य एक साथ वृताकार रूप में उदय हो गये हों।

पूज्य गुरुदेव का बुध पर्वत तो अत्यधिक विकसित है ही, इसके नीचे यह **'अतुल्या चिन्ह'** भी अपनी भव्यता के साथ अंकित है, पंडित जी के अनुसार करोड़ों-करोड़ों लोगों में से किसी एक व्यक्ति के हाथ में यह चिन्ह अंकित होता है।

इस चिन्ह का दर्शन ही जीवन का परम सौभाग्य माना गया है, यदि कोई व्यक्ति ऐसे चिन्ह के दर्शन कर लेता है, या स्पर्श कर लेता है, तब भी उसका जीवन धन्य हो जाता है और कई सिद्धियों का तो वह स्वतः अधिकारी बन जाता है।

जिसके भी हाथ में ऐसा चिन्ह होता है, वह समस्त सिद्धियों का स्वामी और अद्वितीय युग पुरुष होता है, इसी चिन्ह से उसकी अद्वितीयता और युग पुरुषता प्रमाणित होती है, उसे साधनाएं करने की आवश्यकता नहीं होती, सिद्धियां स्वयं जयमाला लिये उसके सामने खड़ी रहती हैं।

अपने जीवन काल में ही ऐसा व्यक्ति अपनी सिद्धियों के बल पर वह सब कुछ प्राप्त करने में समर्थ, सफल हो पाता है, जो आवश्यक है, ऐसे व्यक्तित्व को पाकर सिद्धाश्रम स्वयं अपने आपको गौरवान्वित अनुभव करता है।

९-ब्रह्माण्ड

यह शुभ चिन्ह दस करोड़ व्यक्तियों में से किसी एक व्यक्ति के हाथ में अंकित होता है, बृहस्पति पर्वत के मूल में जहां जीवन रेखा प्रारम्भ होती है, उसके आस-पास यह श्रीचिन्ह अंकित होता है, यह चिन्ह दण्ड के आकार का होता है, और स्पष्टता के साथ दिखाई देता है।

पंडित जी के अनुसार—पूज्य श्रीमाली जी के दोनों हाथों में यह **'ब्रह्माण्ड चिन्ह'** अंकित है, इसका दर्शन

ही अपने आप में अत्यन्त सौभाग्यशाली माना गया है।

जिसके हाथ में यह चिन्ह प्रामाणिकता के साथ अंकित होता है, वह अपनी सिद्धियों के बल पर समस्त ब्रह्माण्ड में कहीं पर भी विचरण करने में समर्थ, सफल होता है, प्रत्येक लोक ऐसे व्यक्तित्व को अपने यहां पा कर धन्य अनुभव करते हैं, ऐसे व्यक्ति अपनी साधना के माध्यम से सूक्ष्म शरीर से विश्व में कहीं पर भी विचरण करने में समर्थ होते हैं, और अपनी इच्छानुसार जितने भी शरीर धारण करना चाहें या जितने रूपों में स्पष्ट होना चाहें, हो सकते हैं, भगवान श्रीकृष्ण ने इसी चिन्ह की बदौलत रासलीला में सैकड़ों रूप धारण कर लिये थे, और प्रत्येक गोपी के साथ कृष्ण के रूप में खड़े हो गये थे।

ऐसा व्यक्तित्व कई-कई जन्मों का साक्षी होता है, और किसी को भी देख कर उसके पिछले कई जन्म उसके सामने स्पष्ट हो जाते हैं, इच्छा होने पर ही वह सामने वाले के पिछले जीवन को स्पष्ट करता है।

वास्तव में ही यह दुर्लभ चिन्ह पूर्ण भव्यता के साथ पूज्य गुरुदेव के दोनों हाथों में प्रामाणिकता के साथ अंकित है।

१०-कलात्मिका

यह चिन्ह शनि पर्वत और सूर्य पर्वत के बीच में अंकित होता है, जो कि वृत्ताकार होता है, और उसमें से सोलह किरणें निकलती हुई सी प्रतीत होती हैं, यह अपने आप में अद्वितीय और सौभाग्यशाली चिन्ह माना गया है, जो श्रीमाली जी के दोनों हाथों में अत्यन्त भव्यता के साथ अंकित है।

यदि उनके दाहिने हाथ को सूक्ष्मता से देखें, तो शनि पर्वत और सूर्य पर्वत के संधिस्थल पर सूर्य के समान एक चिन्ह दिखाई देता है, और छोटी-छोटी रेखाएं इसके चारों ओर निकलती हुई सी प्रतीत होती हैं, जो कि अग्नि मण्डल की दस कलाएं, सूर्य मण्डल की बारह कलाएं, और सोम मण्डल की सोलह कलाएं हैं।

यह चिन्ह तो बिरले लोगों के हाथों में ही अंकित होता है, और कई सौ वर्षों बाद किसी एक-आध व्यक्ति के हाथ में ही यह चिन्ह दिखाई देता है।

वास्तव में ही वह सौभग्यशाली व्यक्ति होता है, जो किसी के हाथ में ऐसे चिन्ह के दर्शन या स्पर्श करने में समर्थ हो पाता है, जो व्यक्ति ऐसे चिन्ह के दर्शन कर लेता है, उसके आत्मचक्षु बिना किसी प्रयास के स्वतः जाग्रत हो जाते हैं, और कुण्डलिनी जागरण की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

ऐसा व्यक्ति अत्यन्त तेजस्वी और दिव्य होता है, जिनका सानिध्य और साहचर्य भी सौभाग्य से प्राप्त होता है, ऐसा व्यक्ति सरल और सात्विक जीवन जीता हुआ भी अपने आप में युग पुरुष होता है, और पूरे युग को मार्गदर्शन देने में समर्थ होता है, ऐसा व्यक्ति किसी भी पुरुष या स्त्री को सिद्धि पुरुष बना सकता है, और चाहने पर शुक्र ग्रह या अन्य किसी भी ग्रह की यात्रा सूक्ष्म शरीर से सम्पन्न करा सकता है, उसके लिए ब्रह्माण्ड में किसी प्रकार की रोक-टोक नहीं होती, और वह चाहे तो किसी को भी सिद्धाश्रम या अन्य कहीं पर भी वायु वेग से प्राण तत्व के माध्यम से गतिशील कर सकता है।

११-राज-राजेश्वरी

यह दस महाविद्या एवं षोडशी चिन्ह है, जो कि व्यक्ति के हाथ में ठीक मध्य में अंकित होता है, दाहिने हाथ के मध्य में १०८ छोटी-छोटी रेखाओं से निर्मित यह चिन्ह ऐसा प्रतीत होता है, मानों सिंहासन पर त्रिपुर सुन्दरी भव्यता के साथ बैठी हुई हो।

यदि सूक्ष्मता से हाथ का अवलोकन करें, तो श्रीमाली जी के दोनों हाथों में यह चिन्ह पूर्णता के

साथ अंकित है, वास्तव में ही ऐसा चिन्ह अपने आप में दुर्लभ और अद्वितीय माना गया है, कई हजार वर्षों बाद किसी एक-आध व्यक्ति के हाथ में ही ऐसा चिन्ह अंकित होता है, और फिर यदि दोनों हाथों में यह चिन्ह अंकित हो, तो उसकी तुलना ही नहीं हो सकती।

यह सप्तलोक और तीनों प्रकार की महाप्रकृति से सम्बन्धित चिन्ह है, जिसे अजिता और अपराजिता कहा गया है, यह षोडशी महाविद्या से सम्बन्धित चिन्ह है, कुबेर स्वयं राज-राजेश्वरी का अर्चन सम्पन्न कर अपने आपको सौभाग्यशाली अनुभव करते हैं।

जिसके भी हाथ में यह चिन्ह होता है, उसे विश्व में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती, और वह समस्त ब्रह्माण्ड से जो कुछ भी, जिस प्रकार से भी चाहे, प्राप्त करने में समर्थ, सफल हो पाता है।

ऐसा व्यक्ति किसी दरिद्री को भी धनवान और कुबेर के समान बना सकता है, सामान्य व्यक्ति को सिद्धि पुरुष बना सकता है, और किसी के भी जीवन में जो इच्छा होती है, उसकी पूर्ति स्वतः हो जाती है।

जो व्यक्ति अपने जीवन में एक बार भी ऐसे चिन्ह के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त कर लेता है, उसकी समानता तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी नहीं कर पाते।

१२-सर्वानन्दा

यह चिन्ह दाहिने हाथ में ठीक मध्य में स्थित होता है, जिसके एक तरफ चन्द्र पर्वत और दूसरी तरफ शुक्र पर्वत का संयोग बनता है, पूज्य श्रीमाली जी के दाहिने हाथ में यह चिन्ह पूर्ण स्पष्टता के साथ उभरा है।

महर्षि सांदीपन के अनुसार—यह चिन्ह देखने पर ऐसा प्रतीत होता है मानों भगवती जगदम्बा साक्षात् सिंहासन पर बैठी हो, ऐसा बिम्ब स्पष्टता के साथ अंकित होता है, ऐसे चिन्ह का दर्शन ही जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण कर देता है और वास्तव में ही वह व्यक्ति सौभाग्यशाली होता है, जो किसी महापुरुष के हाथ में अंकित ऐसे चिन्ह के दर्शन करने में समर्थ, सफल हो पाता है।

यह बारहवीं कला है, और जिसके हाथ में यह कला या चिन्ह होता है, वह पृथ्वी ग्रह के अलावा अन्य सभी विशिष्ट ग्रहों पर आ जा सकता है, और वहां अत्यधिक लोकप्रिय होता है, यह स्वयं तो संन्यासी और गृहस्थ दोनों ही जीवन में आनन्दमय होता ही है, जो इसके सम्पर्क में होते हैं, वे भी आनन्दमय जीवन व्यतीत करने में सफल हो पाते हैं, ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में रहना ही जीवन का सौभाग्य माना जाता है, और वह सही अर्थों में अगले कई-कई जन्मों तक ऐसे व्यक्ति के साथ बना रहता है।

१३-श्रीप्रज्ञा

यह चिन्ह अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है, इसे तेरहवीं कला कहा गया है, जो भगवान श्रीकृष्ण के हाथों में गुरु पर्वत के नीचे स्पष्टता के साथ अंकित थी, जिसकी वजह से सैकड़ों रूप धारण करने में वे समर्थ थे, और समस्तसिद्धियों के स्वामी होने के साथ-साथ सही अर्थों में युग-पुरुष कहला सके।

पंडित पीताम्बरदत्त जी के अनुसार— पूज्य श्रीमाली जी के दाहिने हाथ में गुरु पर्वत के नीचे यह चिन्ह भव्यता के साथ अंकित है, जो लक्ष्मी स्वरूपा है, यह चिन्ह देखने पर ऐसा प्रतीत होता है मानों साक्षात् लक्ष्मी कमल दल पर बैठी हुई हो और दो हाथी उस पर कलश से वर्षा कर रहे हों।

यह अपने आप में अत्यन्त अद्वितीय चिन्ह कहा गया है, इसका दर्शन ही समस्त प्रकार के वैभव और आनन्द की प्राप्ति का सूचक है, जो इस चिन्ह के दर्शन कर लेता है, उसके जीवन में दरिद्रता आ ही नहीं सकती।

जिसके हाथ में यह चिन्ह होता है, उसके घर में सभी प्रकार की लक्ष्मियां स्थायी रूप से निवास करती हैं और वह मन्त्र बल से किसी के भी घर में लक्ष्मी वर्षा कराने में समर्थ हो पाता है, वास्तव में ही यह अत्यन्त ही अद्वितीय चिन्ह माना गया है।

१४-भ्रामरी

इसका वर्णन मार्कण्डेय पुराण में भी आया है, यह चिन्ह राहु पर्वत के पास ऊपर की ओर उठा हुआ होता है, और देखने पर ऐसा प्रतीत होता है मानों कोई भ्रमर आकाश की ओर ऊंचा उठ रहा हो।

मैंने इस चिन्ह को पूर्ण प्रामाणिकता के साथ गुरुदेव के दोनों हाथों में देखा है, जिसके भी हाथ में ऐसा चिन्ह होता है वह निश्चय ही समस्त प्रकार के तन्त्रों का ज्ञाता और सिद्धि पुरुष होता है, ऐसे चिन्ह को **'शिवा'** कहा गया है, जो कि साक्षात् शिव का प्रतिरूप है, तन्त्र के क्षेत्र में ऐसे व्यक्तित्व की कोई तुलना नहीं हो सकती, और तन्त्र के बल से वह पूरे ब्रह्माण्ड में कुछ भी परिवर्तन करने में सक्षम हो पाता है।

१५-विधात्री

यह चिन्ह शनि पर्वत और सूर्य पर्वत का जहां संधि-स्थल होता है वहीं पर ऐसा चिन्ह अंकित होता है, यदि सूक्ष्मता से इस चिन्ह को देखें तो ऐसे लगता है जैसे स्वयं चतुर्मुख ब्रह्मा बैठे हुए हों और उनके मुंह से वेद उच्चरित हो रहे हों।

पंडित जी के अनुसार—गुरुदेव के दोनों हाथों में यह चिन्ह प्रामाणिकता के साथ अंकित है, पंडित जी के पास जो हाथ का चित्र था उस पर इंगित कर के बताया कि यह चिन्ह बहुत कम लोगों के हाथों में अंकित होता है, पर जिसके भी हाथ में यह चिन्ह होता है, वह किसी मनुष्य के भाग्य को भली प्रकार से निश्चित कर सकता है और नये सिरे से उसका भाग्य लिख सकता है।

१६-परा

यह सोलहवीं कला है और परा-अपरा विद्या की साक्षीभूत स्वरूपा है, यह चिन्ह सूर्य पर्वत पर ही होता है, और देखने पर ऐसा प्रतीत होता है, मानों **'जवा कुसुम'** पूर्ण क्षमता के साथ खिला हुआ हो, इस चिन्ह की आठ पंखुड़ियां होती हैं, जिनके नाम है,—१-क्षमा, २-शान्ति, ३-प्रीति, ४-बुद्धि, ५-लज्जा, ६-सिद्धि, ७-प्रज्ञा, और ८-ख्याति।

मैंने स्वयं इस प्रकार का चिन्ह पूज्य गुरुदेव के दाहिने हाथ में स्पष्टता के साथ देखा है, जिसके भी हाथ में ऐसा चिन्ह होता है, शास्त्रों के अनुसार —वह अद्वितीय युग-पुरुष होता है, ऐसे व्यक्ति के दर्शन प्राप्त करना ही सौभाग्यदायक होता है, वास्तव में वे तो अत्यन्त सौभाग्यशाली माने जाते हैं, जो ऐसे व्यक्तित्व के सम्पर्क या साहचर्य में रहते हैं।

कहते-कहते पंडित पीताम्बरदत्त जी खो से गये, शायद उन्हें अपने बाल्य जीवन की घटनाएं याद आ गई थीं और उनकी आंखें भीग सी गईं।

मैंने अनुभव किया कि वास्तव में ही वर्तमान युग में एक अद्वितीय व्यक्तित्व हमारे बीच है, यह अलग बात है कि हमारी स्थूल और संदेह भरी आंखें नहीं पहिचान पाईं या हमारा कुतर्की मन नहीं पहिचान पाये, परन्तु यदि समय रहते हम सब इनसे वंचित रह गये तो हमारा जीवन एक सामान्य जीवन बन कर रह जायेगा। ●

बद्रीनाथ में कार्यरत

मां योगमाया

के साथ

एक साक्षात्कार

बद्रीनाथ में यों तो सैकड़ों साधु संन्यासी, संन्यासिनियां हैं परन्तु इनमें से तीन अत्यन्त विख्यात हैं–१-स्वामी कृष्णानन्द जो, २-मां भैरवी –जो बद्रीनाथ मन्दिर के नीचे रहती हैं और **३-संन्यासिनी योग माया** जिनका छोटा सा आश्रम माना गांव (जो बद्रीनाथ से ६ किलोमीटर दूर है) के पास गन्धर्व पहाड़ पर है।

लगभग १५ साल पहिले संन्यासिनी योग माया जोधपुर आई थीं, वे नेपाल के राजघराने से सम्बन्धित हैं, और महज फोटोग्राफी तथा राजस्थान के जन-जीवन को कैमरे में उतारने के लिए ही इस तरफ यात्रा पर आई थीं, कौतुहल वश वे एक दिन उस समय जोधपुर में चल रहे, **नवरात्रि साधना शिविर** में आ पहुंची थीं, उस समय पूरे भारत वर्ष से साधक और शिष्य आये हुए थे, और नवरात्रि शिविर चल रहा था।

किसी शिष्य ने उन्हें सुझाव दिया कि आप किसी दिन पूज्य गुरुदेव का प्रवचन क्यों नहीं सुन लेतीं, और उस दिन वह अपना जैसलमेर का टूर कैंसेल कर, सायंकालीन होने वाले प्रवचन में भाग लेने बैठ गई, उस दिन प्रवचन का विषय था **"पिछले जीवन का वर्तमान जीवन पर प्रभाव"** इसी विषय पर पूज्य गुरुदेव बोल रहे थे, और सुनते-सुनते राजकुमारी ऐश्वर्या (संन्यासिनी बनने के पहले उनका यही नाम था) की आंखों से आंसुओं की झड़ी सी लग गई।

दूसरे दिन वे सुबह पूज्य गुरुदेव से मिलीं, यद्यपि मिलने वालों की भीड़ बहुत ज्यादा थी, और उन्हें मुश्किल से १५-२० मिनट बातचीत करने में मिल पाये, पर इस बातचीत के बाद उन्होंने संन्यासिनी बनने का निश्चय कर लिया, और उसी क्षण यह निश्चय कर लिया कि मेरा कार्यक्षेत्र भी बद्रीनाथ ही होगा।

सुख-वैभव, ऐश्वर्य, सम्पन्नता को छोड़ कर एक ही क्षण में कठोर संन्यासी जीवन लेने का निश्चय काफी चुनौती भरा था, पर वे पलट कर नेपाल गई ही नहीं और जोधपुर में ही उस दिन सायंकाल "संन्यास दीक्षा" **लेकर रात की गाड़ी से ही बद्रीनाथ की ओर रवाना हो गई।**

अभी कुछ रोज पहले गुरु भाइयों के साथ बातचीत के प्रसंग में इस घटना की जानकारी मिली तो मुझे एक साल पहले की बद्रीनाथ की यात्रा का स्मरण हो आया, जहां मैंने कृष्णानन्द जी और मां भैरवी के बारे में तो सुना ही था, उससे भी ज्यादा चर्चा संन्यासिनी योग माया के बारे में सुनी थी, यद्यपि समय कम होने की वजह से मैं संन्यासिनी योग माया से मिल तो नहीं सकी थी, पर मन में खटक अवश्य थी, कि काश ! मैं एक बार संन्यासिनी योग माया से मिल पाती।

जब इस बार जोधपुर में जन्म दिवस समारोह पर गुरु भाइयों के मुंह से इस चर्चा को सुना, तो साल भर पहले की घटना स्मरण हो आई, और मन में विचार उठा (**उन १५ मिनटों में जो राजकुमारी ऐश्वर्या ने गुरुदेव के साथ बातचीत की थी**) कि उन १५ मिनटों में ऐसी क्या बातचीत हुई, या ऐसा क्या घटित हुआ, कि राजकुमारी ऐश्वर्या ने एक क्षण में ही संन्यास लेने का निश्चय कर लिया, और निश्चय ही नहीं किया अपितु उसे कार्य रूप में परिणित भी कर लिया, जोधपुर से ही उसने काठमांडू पिता को अपने निश्चय की सूचना दे दी, और सुख और सम्पन्नता, ऐश्वर्य और वैभव की जिन्दगी त्याग कर **संन्यासिनी दीक्षा** लेकर बद्रीनाथ चली गई।

मैं मन में घुमड़ते हुए इन विचारों को संतुष्ट नहीं कर सकी, और संन्यासिनी योग माया से मिलने का एक बार पुनः निश्चय कर लिया, जरूर कोई न कोई बात है, जरूर उन १५ मिनटों में कोई ऐसी घटना घटित हुई, जो राजकुमारी के मन को **'क्लिक'** कर गई, जरूर वे १५ मिनट बहुत महत्वपूर्ण थे, उन १५ मिनटों में क्या बातचीत हुई, इसको जानने के लिए यह जरूरी था कि संन्यासिनी योग माया से मिला जाय, और संभव हो तो इस सम्बन्ध में कुछ रहस्य ज्ञात किया जाय।

मैंने जोधपुर में गुरु भाइयों को बिना कुछ सूचना दिये, अपने पति के साथ बद्रीनाथ जाने का निश्चय कर लिया, मेरे पति भी मेरे साथ जन्म समारोह पर पूज्य गुरुदेव के चरणों में उपस्थित हुए थे, पर मैंने उन्हें भी यह स्पष्टता के साथ नहीं बताया था, कि मैं बद्रीनाथ क्यों जा रही हूं, और मुझे क्या ज्ञात करना है ?

बद्रीनाथ तक हरिद्वार से ऋषिकेश होते हुए सीधी बस जाती है, अभी तक मन्दिर के द्वार खुले नहीं थे, लगभग मई महीने में मन्दिर के कपाट खुलते हैं, परन्तु अप्रैल के अन्त में ही बद्रीनाथ पर चहल-पहल शुरू हो गई थी, और सैकड़ों हजारों यात्री आ-जा रहे थे।

बद्रीनाथ के पीछे **नर नारायण पर्वत** भव्यता के साथ दिखाई देते हैं, मन्दिर से बांयीं ओर थोड़ी दूरी पर कृष्णानन्द जी की कुटिया है, जो भयंकर सर्दी और बर्फ में भी इसी कुटिया में बने रहते हैं, मन्दिर के नीचे ही एक कोटड़ी में मां भैरवी रहती हैं, पर मेरा लक्ष्य तो संन्यासिनी योग माया से मिलने का था, जिनका बद्रीनाथ से ६ किलोमीटर दूर माना गांव के पास, गन्धर्व पहाड़ पर छोटा सा आश्रम है।

यद्यपि इस तरफ मिलिट्री की चहल-पहल है, परन्तु थोड़े से प्रयत्न से **माना गांव** की ओर जाना हो सकता है, मैं अनुमति ले कर उस आश्रम तक पहुंच गई जो **महामाया आश्रम** कहलाता है और जिसकी चर्चा बद्रीनाथ, उसके आस-पास और उत्तरकाशी तक है।

सरस्वती नदी के किनारे पहाड़ी पर यह छोटा सा आश्रम है, जिसमें दो-तीन कुटियाएं हैं, उनमें से बीच वाली कुटिया में संन्यासिनी योग माया रहती हैं।

अत्यन्त गौर वर्ण, मध्यम कद, पीठ पर बिखरे हुए काले और घने बाल, अत्यन्त तेजस्वी मुख मण्डल तथा तपस्या से आपूरित नेत्र........, भगवी साड़ी पहिने हुए संन्यासिनी योग माया एक शिला पर ध्यान मग्न बैठी हुई थीं, उनको देखते ही विश्वास हो जाता है कि वास्तव में ही यह किसी ऊंचे घराने से संबंधित महिला हैं, और संन्यास के क्षेत्र में भी उन्होंने अद्वितीयता प्राप्त की है।

मैं उनके सामने ही जा कर बैठ गई, कुछ ही क्षणों बाद उनके कमल के समान नेत्र खुले, मुझे देखते ही उनके चेहरे पर एक दीप्त मुस्कान खिल गई, और मेरे वहां पहुंचने का कारण पूछा।

मैंने उत्तर दिया कि मैं पिछले दिनों जोधपुर पूज्य गुरुदेव के जन्म दिवस समारोह पर पहुंची थी, और वहीं पर मुझे आपके बारे में जानकारी मिली थी कि आप नेपाल की राजकुमारी हैं, और आप वहीं पर पूज्य गुरुदेव से ही संन्यास दीक्षा ले कर इस तरफ आ गई थीं, पलट कर नेपाल गई ही नहीं थीं।

एक क्षण ठहर कर मैंने पूछा कि जरूर कोई कारण रहा होगा, जब आपने संन्यास दीक्षा लेने का निर्णय लिया होगा, अन्यथा वैभव-विलास, ऐश्वर्य और सम्पन्नता में पली राजकुमारी एकाएक इतना कठोर निर्णय नहीं ले लेती।

उन्होंने उत्तर दिया — "मुझे वह दिन भली प्रकार से स्मरण है पर वह मेरे व्यक्तिगत जीवन का एक महत्वपूर्ण पृष्ठ है, जिसे खोलना अब आवश्यक नहीं रह गया है।"

मैंने अत्यन्त विनम्रता से प्रश्न किया, आप जिन गुरुदेव की शिष्या हैं, मैं भी उन्हीं की शिष्या हूं, इस दृष्टि से आप मेरी गुरु बहिन हैं, इसलिए आपको तो कुछ तथ्य स्पष्ट करने ही चाहिए, जिससे कि मेरे मन की जिज्ञासा थोड़े बहुत रूप से शान्त हो सके।

उन्होंने दो क्षण मेरी ओर गहराई से देखा और फिर बीते दिनों की स्मृतियों में खो सी गई, उन्होंने कहा, "मुझे वह दिन और दृश्य भी प्रकार से स्मरण है।"

मैं तो उच्चकोटि के राज्य घराने से सम्बन्धित रही हूं और वैभव विलास में ही पल कर बड़ी हुई थी, मैं तो जैसलमेर जाना चाहती थी और साथ ही उस तरफ के प्रदेश को देख लेना चाहती थी।

परन्तु उस दिन जब मैं जोधपुर में अपने होटल में थी और जैसलमेर जाने के लिए सामान बांध रही थी, तो मेरे पास श्रीमाली जी की लिखी हुई एक पुस्तक पड़ी थी, जिस पर जोधपुर का ही पता अंकित था, मैंने विचार किया कि जब जोधपुर पहुंच ही गयी हूं तो इतने बड़े लेखक से एक बार मिल ही लूं, और यदि हो सके तो अपना हाथ दिखा कर अपना भविष्य जान लूं, शायद वह पुस्तक 'प्रेक्टिकल पामिस्ट्री' थी-जो अंग्रेजी में लिखी हुई थी।

मैं जब उधर गई तो कोई शिविर चल रहा था और सैकड़ों शिष्य और शिष्याएं पीली धोती या साड़ी पहिने इधर-उधर घूम रहे थे, मैंने उनमें से एक शिष्य को श्रीमाली जी के बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि अभी शिविर चल रहा है, शायद फिलहाल अभी मिलने का समय न दें, पर जब आप यहां तक आ ही गई हैं, तो क्यों नहीं शाम का प्रवचन सुन लेतीं, इससे आप उन्हें मंच पर बैठे देख भी सकेंगी और प्रवचन भी सुन लेंगी।

मैंने प्रवचन सुनने का निश्चय कर लिया और यह भी निश्चय कर लिया कि अब जैसलमेर कल ही जाऊंगी, जब यहां आ ही गई हूं तो अभी या कल सुबह उनसे मिलने की कोशिश कर ही लूंगी।

शाम को पूरा पण्डाल साधकों और साधिकाओं से भरा हुआ था, आरती के बाद मंच पर श्रीमाली जी बैठे हुए थे, मैंने उन्हें जीवन में पहली बार देखा था, पर देखते ही मेरे मन में ऐसा 'क्लिक' हुआ कि इस व्यक्तित्व को

तो मैंने पहले भी कभी देखा है, और बहुत निकटता से देखा है।

पर कहां देखा है, यह तो सम्भव ही नहीं है, क्योंकि मैं तो इससे पहले अधिकतर नेपाल में रही या यूरोप के कुछ देशों का भ्रमण किया था, जोधपुर तो पहली बार आई थी।

फिर भी उस बैठे हुए व्यक्तित्व से आत्मीयता सी अनुभूति हो रही थी, लग ही नहीं रहा था कि कोई अनजान व्यक्ति मंच पर बैठा है।

उस दिन उनके प्रवचन का आधार पूर्व जीवन था, और वे यह बता रहे थे कि पूर्व जीवन भी उतना ही सत्य हैं जितना वर्तमान जीवन, यह अलग बात है कि हम वर्तमान जीवन से तो परिचित हैं, पर पूर्व जीवन का हमें स्मरण नहीं रहता।

उन्होंने प्रवचन के मध्य में बताया कि पूर्व जीवन को हम बिलकुल नकार नहीं सकते, क्योंकि उस जीवन का पूरा-पूरा प्रभाव वर्तमान जीवन पर होता ही है, और पूर्व जीवन के सम्बन्ध ही सही और प्रामाणिक सम्बन्ध होते हैं, वर्तमान जीवन में भी जब तक उन लोगों से, उसी तरीके से, उन्हीं सम्बन्धों के साथ नहीं मिल लेते–जो सम्बन्ध पिछले जीवन में थे, तब तक मन को शान्ति अनुभव नहीं होती।

उन्होंने कहा कि मैं आप में से प्रत्येक के पूर्व जीवन से परिचित हूं और आपके मेरे सम्बन्धों के बारे में भी मैं भली प्रकार से जानता हूं।

मैं प्रवचन तो सुन रही थी, पर मन में अजीब सी खुमारी, अजीब सी बेचैनी और बेकरारी सी अनुभव हो रही थी, यह अजीब प्रकार की छटपटाहट थी, जिसे मैं स्वयं जान नहीं पा रही थी।

दूसरे दिन मैं सुबह पूज्य गुरुदेव से मिली, बाहर साधकों की काफी भीड़ थी–जो मिलने के लिये उत्सुक थे, लगभग आधे घण्टे बाद मेरा नम्बर आया तब तक मैंने कुछ प्रश्नों को अपने मन में संजो कर रख लिया था, जो मुझे पूछने थे।

मैंने पूछा—"आपके कल रात के प्रवचन का मेरे ऊपर काफी प्रभाव पड़ा है, परन्तु मेरा मन मान नहीं रहा है कि पिछला जीवन भी कोई जीवन होता है या पिछले जीवन का प्रभाव वर्तमान जीवन पर पड़ता भी है।

एक क्षण मैंने उनकी ओर ताकते हुए कहा कि मैं विज्ञान पढ़ी हूं और मेरा मन इस बात को स्वीकार नहीं कर रहा है, यद्यपि यह बात सही है कि मुझे यहां का वातावरण, यहां के गुरु-भाई और आप सब कुछ परिचित से लग रहे हैं, पर यह संयोग भी हो सकता है, मैं नहीं जान रही हूं, कि परिचितता या अपनापन सा क्यों अनुभव हो रहा है, जब कि मैं यहां पहले कभी नहीं आई थी, और न आपको कभी देखा था।

उन्होंने उत्तर दिया—"तुम्हारा विज्ञान अभी तक अधूरा है, और वह केवल वर्तमान क्षण को ही देख सकता है, पिछला जीवन भी उतना ही सत्य है जितना वर्तमान जीवन, और जो पिछले जीवन को समझ लेता है और उसके अनुसार अपने जीवन को ढाल लेता है, उसी का जीवन सही अर्थों में शानदार और महत्वपूर्ण बन जाता है।"

मैंने पूछा कि यदि आपके तथ्य इतने सही ही हैं, तो क्या आप मेरे पिछले जीवन के बारे में बता सकते हैं?

वे शायद इस प्रश्न का उत्तर टालना चाहते थे, परन्तु फिर न मालूम उन्हें क्या विचार आया और उन्होंने एक क्षण मेरी ओर देख कर कहा—"मैं तुम्हारे जीवन से विशेष कर पिछले जीवन से भली प्रकार से परिचित हूं, आज ही वह क्षण था–जब तुम्हारा और मेरा मिलना सम्भव था, इस क्षण को न तो पहले लाना उचित था और न इसमें

विलम्ब हो सकता था, तुम अगर यहां आई हो तो पिछले जीवन की प्रेरणा से ही आई हो।"

फिर उन्होंने रुक कर कहा—"तुम्हारा जन्म गढ़वाल में टिहरी से आगे धरासू में हुआ था, यदि तुम धरासू से उत्तरकाशी की ओर जाने वाली सड़क की ओर चलो तो तुम्हें एक बहुत अच्छा कस्बा दिखाई देगा—जिसका नाम पहाबी है. यहां पर एक पहाड़ी है, और इस पहाड़ी से तुम्हारा विशेष सम्बन्ध है.।

धरासू में ठाकुर इन्द्रदमन सिंह आज भी जीवित हैं, जिनकी तुम पुत्री थी, बड़ी होने पर जहां तुम्हें शिकार और घुड़सवारी का शौक था, वहीं तुम कुछ विशेष भी करना चाहती थी, उन्हीं दिनों तुम वहां एक संन्यासी के सम्पर्क में आई, और कुछ दिनों बाद उनसे संन्यास दीक्षा भी ले ली, यद्यपि इसका तुम्हारे घर वालों ने काफी विरोध भी किया, परन्तु तुम अपने निर्णय पर दृढ़ थी, और लगभग उसी पहाड़ी पर उस संन्यासी के साथ तीन वर्षों तक विविध साधनाएं सम्पन्न की, पहाड़ी के ऊपर जो आश्रम बना हुआ है, उस आश्रम में तुम्हारी छोटी सी फोटो अभी भी विद्यमान है।"

मैंने कुछ कौतूहल और कुछ आश्चर्य से उन संन्यासी का नाम पूछा तो श्रीमाली जी चुप रह गये, बोले—"समय आने पर यह सब कुछ पता चल जायेगा, परन्तु तुम एक दिन संन्यास धर्म को खंडित कर किसी युवक के प्रेम में उलझ गई और अपने गुरु को ही धोखा दे दिया तथा उस युवक के साथ किसी अन्य स्थान पर चली गई, पर तुम्हारा भागना भी व्यर्थ रहा, क्योंकि उस युवक ने छः महीने बाद ही जहर दे कर तुम्हें समाप्त कर दिया, क्योंकि वह युवक अपनी बदनामी से संभवतः बचना चाहता था।"

पर इसका प्रमाण क्या है ? यह कल्पना भी तो हो सकती है ? मैंने कौतूहलवश पूछा।

उन्होंने उत्तर दिया—"वास्तविकता तो तुम खुद जान सकती हो, पर इससे ज्यादा फिलहाल मुझे कुछ नहीं कहना, यह अलग बात है कि आने वाले समय को मैं पहिचान रहा हूं, कि निकट भविष्य में क्या होने जा रहा है।"

मुलाकात समाप्त हो गयी थी, मैं पूरे अविश्वास के साथ उठ खड़ी हुई और बाहर आ गई, मेरा मन कह रहा था कि यह सब कहानी है, और इस बात में रंच मात्र भी सत्यता नहीं हो सकती।

मैं होटल आ गई परन्तु मेरा मन शान्त नहीं था, मैंने जैसलमेर जाने का विचार छोड़ दिया और निश्चय कर लिया कि मैं वापिस काठमांडू चली जाऊंगी, मैं उसी दिन दिल्ली रवाना हो गई, परन्तु दिल्ली जाने पर भी मेरा मन शान्त नहीं था और मैं श्रीमाली जी के कहे शब्दों को टटोल लेना चाहती थी, यद्यपि मैं जान गई थी, कि उस तरफ जाना और यह सब जांचना-परखना बेकार सा ही होगा।

मैंने हरिद्वार का टिकट कटाया और वहां से ऋषिकेश पहुंची, और टेक्सी किराये पर ली।

जिस पत्थर पर संन्यासिनी योग माया बैठी थीं, उस पर धूप आ गई थी, उन्होंने कहा—"चलो कुटिया में बैठते हैं वहीं बातचीत होगी, और वे आगे-आगे चल दीं।"

संन्यासिनी योग माया की कुटिया साफ-सुथरी, स्वच्छ और पवित्र प्रतीत हो रही थी, कुटिया में एक तरफ घास का बिछौना बिछा हुआ था, और दूसरी तरफ एक चौकी पर गुरुदेव श्रीमाली जी का फोटो लगा हुआ था।

संन्यासिनी योग माया ने उस फोटो को दण्डवत प्रणाम किया और फिर एक तरफ बैठ गई, मैं भी उनके पास ही जमीन पर बैठ गई, मेरे मन में कौतुहल और जिज्ञासा बढ़ रही थी, मैंने पूछा—फिर क्या हुआ ?

संन्यासिनी योग माया ने उत्तर दिया मैं जब कार से धरासू पहुंची तो मालूम पड़ा कि वास्तव में ही वहां ठाकुर इन्द्रदमन सिंह रहते हैं, और उनका काफी बड़ा

मकान है, मैंने टैक्सी उनके घर के आगे ही रोकी, एक आधुनिक वेश-भूषा में सुन्दर युवती के आने का समाचार जानकर इन्द्रदमन सिंह स्वयं बैठक में आये और आश्चर्य से मेरी ओर देखते हुए पूछा—मेरा नाम इन्द्रदमन सिंह है, फरमाइये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं ?

मैंने बैठने की इच्छा प्रकट की, तो मुझे एक मोढ़े पर बैठने का संकेत दिया और दूसरे मोढ़े पर वे स्वयं बैठ गये, मैंने कहा—"मैं इस तरफ घूमने और हिमालय के अच्छे चित्र उतारने के लिए आई हूं, यों मैं मूलतः नेपाल की रहने वाली हूं।"

फिर मैंने चतुराई से बात आगे बढ़ाते हुए मूल विषय पर आ कर पूछ ही लिया, कि आपके कितने लड़के-लड़कियां हैं ?

उन्होंने उत्तर दिया – लड़का तो कोई हुआ ही नहीं, काफी वर्ष पहले एक लड़की अवश्य हुई थी, जिसका नाम दिव्यांगना था, उसे शिकार और घुड़सवारी का बहुत शौक था।

वे भूतकाल की घटनाओं में खो से गये, फिर बोले उन्हीं दिनों यहां प्रसिद्ध संन्यासी **स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी** आये थे, उनसे मैंने काफी वर्ष पहले शिष्यत्व स्वीकार किया था, मेरी लड़की दिव्यांगना ने भी दीक्षा लेने का विचार किया, तो मैंने स्वीकृति दे दी, क्योंकि मैं जानता था कि लड़की बहुत जिद्दी है और जो सोचा है, वह कर के ही रहेगी।

एकाएक उनका स्वर अत्यन्त कड़वा, तीखा और उत्तेजक हो उठा बोले—"मगर मैं उसको अपनी लड़की कहता नहीं, उसने अद्वितीय गुरुदेव के सान्निध्य में पहावी पहाड़ी पर बने आश्रम में तीन साल में काफी साधनाएं सम्पन्न की, और आस-पास के क्षेत्र में उसका नाम सम्मान के साथ लिया जाने लगा, पर एक दिन वह किसी राजपूत युवक के साथ चुपचाप भाग गई, और इस प्रकार उसने मेरे कुल को तो कंलक लगाया ही, गुरुदेव के साथ भी धोखा ही किया, इसके बाद गुरुदेव भी वहां नहीं रहे, और हमेशा के लिए उस स्थान को छोड़ कर मानसरोवर की ओर चले गये।"

फिर क्रोध के साथ बोले—"यह अच्छा हुआ कि उस राजपूत युवक ने उस दुष्ट लड़की को जहर देकर समाप्त कर दिया, मैं तो उसे अपनी लड़की ही नहीं मानता" और कहते-कहते वे घृणा के साथ उठ खड़े हुए।

श्रीमाली जी ने जोधपुर में मुझे जो बातें कही थीं, वे अक्षरशः सही निकल रही थीं, मैंने ठाकुर साहब से विदा ली, और कार द्वारा पहावी के पास पहाड़ी पर बने आश्रम पर गई, वहां पर दो शिष्य और दो शिष्याएं उस आश्रम की देख भाल करते हैं, एक तरफ श्रीमाली जी का बहुत बड़ा चित्र लगा हुआ था, मैंने वहां आश्रम की देख-रेख करने वाले एक वृद्ध व्यक्ति को दिव्यांगना के बारे में पूछा तो उसका मुंह अत्यन्त कड़वा हो उठा, मेरे जोर देने पर उन्होंने कमरे में लगे उस फोटो की ओर संकेत किया, जो संन्यासिनी दिव्यांगना का था, पर उस व्यवस्थापक ने भी वही कहानी दोहराई, जो इन्द्रदमन सिंह ने कही थी।

मैं पश्चात्ताप की आग में जल रही थी, मैंने इतने बड़े संन्यासी और गुरु को अपने थोड़े से देह सुख के लिए धोखा दे दिया था, और मैंने संन्यास धर्म को खंडित कर दिया था, यह वेदना मेरे पूरे शरीर को मथ रही थी, मैंने उस फोटो की ओर देखा, और आश्चर्य की बात यह कि उस फोटो में और मुझ में ८० प्रतिशत साम्यता थी, फोटो को देख कर मुझे ऐसा लग रहा था, कि जैसे मुझे संन्यासी के कपड़े पहना दिये हों, और अभी-अभी मेरा फोटो खींच कर यहां दीवार पर लगाया हो।

मुझे श्रीमाली जी पर श्रद्धा हो आई, मुझे यह रहस्य भी ज्ञात हुआ कि उन्होंने अपनी बातचीत में संन्यासी गुरु का नाम क्यों नहीं बताया था, मुझे यह भी विश्वास हो गया कि वास्तव में ही उन्हें किसी के भी पूर्व जीवन को

देखने की शक्ति प्राप्त है, और वे जो कुछ भी बताते हैं वह अक्षरशः सत्य और प्रामाणिक होता है।

मैं वहां से पश्चात्ताप की अग्नि में झुलसती हुई टैक्सी से ही वापिस हरिद्वार आ गई, वहां पर मन को शान्ति अनुभव नहीं हो रही थी, और टैक्सी से ही दिल्ली होते हुए जोधपुर जा पहुंची।

इस बार जब मैं गुरुदेव से मिली तो मेरी आंखों में आंसुओं की झड़ी लगी हुई थी, मैंने प्रार्थना की कि मुझे हर हालत में संन्यास दीक्षा दे दी जाय।

उन्होंने कुछ आनाकानी की, पर मैं अत्यन्त विनम्रता के साथ उनसे इस बात के लिए प्रार्थना करती रही, और अन्त में उन्होंने संन्यास दीक्षा देते हुए मेरा नाम योग माया रख दिया।

मैं उसी कड़ी से अपने आपको जोड़ना चाहती थी, गुरुदेव से ही मैं बिछुड़ी थी और उन्हीं से वापिस जुड़ गई, उस क्षण मुझे असीम शान्ति और आनन्द की अनुभूति हुई, गुरुदेव की आज्ञा ले कर मैं इस तरफ आ गई, पहले तो मैं धरासू या पहावी स्थान पर ही रहना चाहती थी, पर फिर कुछ कारणों से मैं बद्रीनाथ आ गई, और तब से मैं यहीं पर हूं।

वास्तव में ही संन्यासिनी योग माया के चेहरे पर दैदीप्यमान तेज और प्रसन्नता की छलछलाहट थी, ऐसा लग रहा था कि उनके रोम-रोम में गुरुदेव स्थापित हैं, आज बद्रीनाथ के क्षेत्र और पूरे गढ़वाल में संन्यासिनी योग माया की पवित्रता, दिव्यता और तेजस्विता की चर्चा है और उच्चकोटि के संन्यासी उन्हें आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते हैं।

उनसे साक्षात्कार करने के बाद मैंने अनुभव किया, कि जब तक पिछला जीवन ज्ञात नहीं हो जाता, तब तक यह जीवन अधूरा सा ही होता है, और जब तक पिछले जीवन से जुड़ नहीं जाते तब तक वर्तमान जीवन व्यर्थ ही है। ●

(पृष्ठ संख्या ३२ का शेष भाग)

यह प्रयोग बता देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं, जिससे कि वे इस प्रयोग को सम्पन्न कर लाभ उठा सकें।

जिस दिन यह प्रयोग प्रारम्भ करना हो, उस दिन सामने कर्ण पिशाचिनी यन्त्र रख दें और वे ग्यारह उपकरण भी सामने रख दें और फिर **'हकीक माला'** से निम्न मन्त्र जप प्रारम्भ करें, नित्य १०१ माला मन्त्र जप करना आवश्यक है और आठ दिन तक इस प्रयोग को इसी प्रकार सम्पन्न करें।

प्रयोग प्रारम्भ करने से पूर्व एक तेल का दीपक लगा दें जिसमें किसी भी प्रकार का तेल हो और मन्त्र जप प्रारम्भ करने से पूर्व उस दीपक में से थोड़ा सा तेल अपनी उंगलियों पर ले कर दोनों पैरों की तलहटियों पर और दोनों हाथों की हथेलियों पर लगा दें और फिर मन्त्र जप करें, इस बात का ध्यान रखें कि मन्त्र जप करते समय बीच में कोई विघ्न न आवे या बीच में न उठें।

कर्ण पिशाचिनी गोपनीय मन्त्र

।। ॐ क्लीं कर्ण पिशाचिन्यै फट् ।।

जब आठ दिन के पश्चात् प्रयोग पूरा होता है तो एक अत्यन्त सौम्य सुन्दर नारी आकृति सामने आकर खड़ी होती है और वचन देती है कि आप जब भी कोई प्रश्न मन ही मन करेंगे तो मैं आपके कानों में उसका उत्तर दे दूंगी- और ऐसा कह कर वह अदृश्य हो जाती है।

इसके बाद वह व्यक्ति जब भी किसी व्यक्ति या स्त्री को देखता है और तो मन ही मन इस मन्त्र का ११ बार उच्चारण कर सम्बन्धित प्रश्न पूछे तो उसके कानों में साफ-साफ आवाज और उस प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो जाता है पर पास बैठे हुए व्यक्ति-न तो अदृश्य कर्ण पिशाचिनी को देख पाते हैं और न उसकी आवाज ही सुन पाते हैं।

वस्तुतः यह प्रयोग आज के युग में अद्वितीय चमत्कारिक सिद्धि प्रयोग है, जिसे प्रत्येक साधक को सम्पन्न कर अपने जीवन को निर्भय और निश्चिन्त बना देना चाहिए। ●

कर्ण पिशाचिनी सिद्धि

कर्ण पिशाचिनी अब केवल भारतीय सिद्धि ही नहीं रही अपितु पश्चिम के वैज्ञानिकों ने भी इसकी उपलब्धियों और विशेषताओं को आश्चर्य के साथ देखा है, और अधिकांश पश्चिम वासी इस विद्या को सीखने के लिए उतावले हो उठे हैं।

पिशाचिनी शब्द से डरने की जरूरत नहीं, यह तो अत्यन्त सरल, सहज और सौम्य साधना है, जिसे कोई भी सम्पन्न कर इसे सिद्ध कर सकता है।

और एक नवीन पद्धति से, सौ टंच खरी प्रामाणिक और निश्चित रूप से सिद्धि दायक साधना।

१- कोई अनजान व्यक्ति आपसे मिलने के लिए आता है, और उसको देखते ही आपके कान में सरसराहट सी अनुभव होती है, जिसे केवल आप ही सुन पाते हैं और वह शक्ति आपके कान में उस व्यक्ति का नाम और उसका पूरा पता बता देती है, और जब आप उसे उसके नाम से ही पुकारते हैं तो वह आश्चर्यचकित रह जाता है।

२- आपका नौकर काफी दिनों से मन लगा कर कार्य कर रहा है और पिछले दस वर्षों से आपके घर में नौकर है, अचानक आपके कानों में सरसराहट होती है कि यह नौकर अपने किसी मित्र के साथ आज की रात एकान्त पा कर आपकी पत्नी की हत्या कर घर का सामान उठा कर ले जाने की योजना बना रहा है और आप उसे एकान्त में ले जा कर धमकाते हैं और वह यही बात सच-सच उगल देता है, तो फिर आप स्वयं निर्णय कर लीजिये कि आप कितने बड़े हादसे से बच गये हैं।

३- आपका पार्टनर या भागीदार काफी दिनों से खिचा-खिचा सा है और अचानक आपके कानों में सनसनाहट सी होती है और कोई शक्ति आपको कहती है कि यह भागीदार अब व्यापार से अलग होना चाहता है, पर इससे पहले यह बैंक से रुपये निकालने की जुगाड़ में है, यह आपको इस तरह से धोखा देना चाहता है और आप पहले से ही सावधान हो जाते हैं, और इस प्रकार आप लाखों रुपये की हानि से अपने व्यापार को बचा लेते हैं।

४- आपकी पत्नी पतिव्रता होने का ढोंग रचा रही है, और वह तन-मन से आपकी सेवा भी कर रही है, किसी प्रकार का कोई संदेह ही नहीं होता पर आप उस दिन ज्यों ही अपनी पत्नी को देखते हैं, तो आपको ऐसा लगता है कि आपकी पत्नी किसी हरीश नाम के व्यक्ति से प्रेम कर रही है और आज ही, दिन के तीन बजे किसी निश्चित स्थान पर मिलने का समय निर्धारित किया है जब कि आप उस समय व्यापारिक कार्य में, दुकान पर यानौकरी पर गये हुए होते हैं—और आप ठीक ३ बजे उस निश्चित स्थान पर पहुंच जाते हैं और अपनी पत्नी को रंगरेलियां मनाते रंगे हाथों पकड़ लेते हैं, तो आप एक भयंकर गर्त में गिरने से बच जाते हैं।

५- इसी प्रकार आपके पति आपको बहुत अधिक विश्वास दिलाते हैं, पाकदामन होने का स्वांग रचते हैं, और बाहर से रंच मात्र भी संदेह नहीं होता पर आपके कान में सरसराहट सी होती है कि आपके पति अमुक स्त्री से प्रेम करते हैं और अमुक समय पर अमुक स्थान पर उसके साथ होंगे—और आप अचानक वहां पहुंच जाती हैं और इस प्रकार अपने पति के चेहरे पर ईमान-दारी का जो मुखौटा लगा हुआ होता है, उसे आप तार-तार कर देती हैं।

६- आप किसी लड़की से प्यार कर रहे हैं, और वह ऊपर से आपको बहुत अधिक चाहती है, आप संशय ग्रस्त हैं कि कहीं वह किसी अन्य युवक के प्रेम में तो नहीं है, पर आपके पास कोई उपाय ही नहीं है, पर यदि आपने यह साधना सिद्ध कर रखी है तो अचानक आपके कान में सरसराहट होती है और सारी बात स्पष्ट हो जाती है, कि आपकी प्रेमिका आपके अलावा किस युवक से प्यार करती है, कब मिलती है, कहां मिलती है - और आप ठीक समय पर पहुंच कर वह सब कुछ जान लेते हैं, जो कि आपको जानना होता है।

७- आप किसी से "व्यापारिक डील" करना चाहते हैं, और आपको एडवान्स धनराशि देनी पड़ रही है, परन्तु आपके मन में विश्वास जम नहीं रहा है कि यह व्यक्ति कैसा है, या यह "डील" पार पड़ेगी या नहीं, पर तभी कानों में स्पष्ट ध्वनि सुनाई पड़ जाती है कि सामने वाला व्यक्ति कैसा है, उसके मन में क्या है और इस "डील" के प्रति वह कितना ईमानदार है।

८- आप किसी लड़की से विवाह करना चाहते हैं, और यह जरूरी है कि विवाह से पूर्व उसके चरित्र के बारे में जानकारी प्राप्त हो जाय, पर इसके लिए कोई रास्ता नहीं—पर आप एक मन्त्र को मन ही मन गुनगुनाते हैं, और उसी क्षण आपके कानों में सरसराहट सी होती है, और वह सिद्धि या कर्ण पिशाचिनी आपके कानों में उस लड़की के पूरे चरित्र के बारे में साफ-साफ बता देती है।

९- आपके पड़ोसी की लड़की घर से भाग गई है उसके घर वाले बहुत परेशान हैं, चारों तरफ खोज कर रहे हैं, परन्तु उसका कहीं पता नहीं चल रहा है, और वे आपके पास आते हैं, आप एक क्षण मन ही मन मन्त्र गुनगुनाते हैं और आपके कानों में सरसराहट सी होती है, और आपके कानों में स्पष्ट आवाज आ जाती है कि वह लड़की इस समय भारतवर्ष में किस स्थान पर किस होटल में, किसके साथ है—और आप यह बात उसके पिता को बता देते हैं और इस प्रकार आप अपने पड़ोसी की इज्जत बचाने में पूरी तरह से सहायक हो जाते हैं।

१०- आप जिससे बात कर रहे हैं, उसके मन में क्या है और आपके प्रति उसके मन में कैसे विचार हैं—यह जानने के लिए, आपकी लड़की कई दिनों से उदास है और इस उदासी का कारण क्या है - यह जानने के लिए, आपका पुत्र कई दिनों से घर पर विलम्ब से आता है और पूछने पर कुछ भी नहीं बताता पर जरूर कोई न कोई कारण है ही यह जानने के लिए अथवा किसी भी व्यक्ति या स्त्री को देखते ही उसके बीते हुए समय और जीवन के बारे में पूरी-पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए, केवल मात्र एक ही साधना है जिसे **"कर्ण पिशाचिनी सिद्धि"** कहते हैं।

और यह कर्ण पिशाचिनी सिद्धि कोई तांत्रिक साधना या उग्र साधना नहीं है, कोई खतरनाक या परेशान करने वाली भी साधना नहीं है, पिशाचिनी शब्द से घबराने की जरूरत नहीं है, जिस प्रकार हमारे समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि वर्ग होते हैं, उसी प्रकार बाहरी वातावरण में भी गन्धर्व, किन्नर, पिशाच आदि वर्ग होते हैं, ये वर्ग मनुष्य के लिए ज्यादा सहायक हैं, ज्यादा उपयोगी हैं, मित्रवत् व्यवहार करने वाले हैं और चौबीसों घण्टे मदद करने वाले हैं।

इसीलिए कर्ण पिशाचिनी साधना अत्यन्त सौम्य साधना कही गई है, जिसे कम पढ़ा लिखा व्यक्ति या विद्वान, पुरुष या स्त्री, बालक या बालिका कोई भी सम्पन्न कर सकता है।

और यदि किसी कारणवश यह साधना अधूरी रह जाती है या इसे पूरी नहीं कर पाते तब भी कोई विपरीत प्रभाव देखने को नहीं मिलता।

और न साधना काल में कोई भयंकर दृश्य या भूत-प्रेत दिखाई देते हैं और न किसी प्रकार के डर की जरूरत है, यह तो अत्यन्त सौम्य साधना है, जिसे किसी भी धर्म या देवी-देवता को मानने वाला इस साधना को सम्पन्न कर लाभ उठा सकता है।

साधना समय

यह साधना किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ की जा सकती है, इस महीने २८ जून १९९१ से ५ जुलाई १९९१ के बीच **"इतर प्राणी साधना दिवस"** है अतः इस अवधि में यह साधना प्रारम्भ की जा सकती है।

यह साधना केवल आठ दिन की है और जिस दिन से आप प्रारम्भ करें उस दिन से आगे के आठ दिनों तक इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए, यह साधना या तो दोपहर ११ बजे से ४ बजे के बीच हो, या रात्रि को ११ बजे से ४ बजे के बीच हो, तो ज्यादा उचित रहता है।

इस साधना में न तो कोई विशेष वस्त्र की आवश्यकता है और न दीपक अथवा अगरबत्ती की, जरूरत यह है कि सामने **'कर्ण पिशाचिनी यन्त्र'** और **उससे सम्बन्धित उपकरण** रखे हुए होने चाहिए, जो लगभग ग्यारह उपकरण होते हैं।

ये सभी उपकरण या यन्त्र आदि प्रामाणिक होने चाहिए, पत्रिका कार्यालय ने **कर्ण पिशाचिनी यन्त्र** तथा **ग्यारह उपकरणों** को मिला कर **"कर्ण पिशाचिनी पैकेट"** तैयार किया है, जिस पर रियायती न्यौछावर-२४०)रु० है।

आप अग्रिम धनराशि न भेजें केवल हमें सूचना दे दें, हम डाक खर्च जोड़ कर इस पूरी सामग्री के साथ संबंधित माला भी भिजवा देंगे, जिससे कि आपको एक साथ पूरी सामग्री प्राप्त हो सके।

यह ध्यान रखें कि समय से पहले आप सूचना दे दें, जिससे कि आपको ठीक समय पर पैकेट प्राप्त हो सके और आप समय पर इस साधना को सम्पन्न कर सकें।

अचूक साधना प्रयोग

एक उच्च कोटि के योगी से हमें इस बार यह अचूक साधना प्रयोग प्राप्त हुआ है, जिसे हमने कई गुरु-भाइयों पर आजमाया है और जिसने भी इस प्रयोग को सम्पन्न किया है उसे पूरा-पूरा लाभ मिला है, इस दृष्टि से यह अचूक और प्रामाणिक प्रयोग है।

हम इस प्रयोग को गोपनीय नहीं रखना चाहते और अपने सभी पत्रिका पाठकों, साधकों और गुरु-भाइयों को

(शेष भाग पृष्ठ संख्या २९ पर देखें)

अचूक गोपनीय प्रयोग

पिछले कुछ अंकों में "नीली पुस्तक" से कुछ प्रयोग देने शुरू किये हैं, जो कि अत्यन्त कम व्यय वाले और मध्यम वर्ग के लिए ज्यादा उपयोगी हैं, इनका प्रभाव उसी समय मिल जाता है, और हाथों हाथ इसका फल भी प्राप्त हो जाता है।

इस बार ऐसे ही कुछ विशेष प्रयोग पत्रिका पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं, जो उनके लिए उपयोगी हैं।

१- कार्य सिद्धि के लिए

बाहर रवाना होते समय किसी कार्य की सिद्धि के लिए यदि घर से बाहर **'घुंघचू'** बिखेर दें और उस पर पांव रख कर यदि व्यक्ति अपने कार्य के लिए निकल जाय, तो अवश्य ही जिस कार्य के लिए वह घर से निकला है, वह कार्य सिद्ध होता ही है।

२- यात्रा की सिद्धि के लिए

यदि लड़की की सगाई, व्यापारिक अनुबन्ध या किसी विशेष कार्य के लिए बस से, ट्रेन से या वायुयान से यात्रा पर जाना चाहें, तो जाने से पहले घर से बाहर अपने ऊपर **'हकीक'** घुमा कर बाईं ओर डाल दें और फिर रवाना हो जांय, तो जिस कार्य के लिए आप जा रहे हैं, उस कार्य में अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

३- स्वप्न में प्रश्न का उत्तर जानने के लिए

कभी-कभी कोई प्रश्न ऐसा सामने आकर खड़ा हो जाता है कि उसका निर्णय तुरन्त लेना पड़ता है और मन यह स्पष्ट नहीं कर पाता कि क्या करना चाहिए, तब उस प्रश्न को लिख कर वह कागज तथा **'एक विरुपाक्ष'** सिरहाने रख देना चाहिए, और फिर तकिये पर सिर लगा कर सो जाना चाहिए, तो निश्चय ही स्वप्न में उस प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो जाता है, और जो वह उत्तर प्राप्त होता है, वह बिलकुल प्रामाणिक और सही होता है।

४- पति को अनुकूल बनाने के लिए

यदि पति कहना न मान रहे हों, मतभेद हो अथवा लड़ाई झगड़ा हो, तो इस प्रयोग को आजमाना चाहिए, शुक्रवार के दिन पांच पीपल के पत्ते और **'भद्रबाहू'** चौराहे पर जहां दो रास्ते मिलते हों वहां चुपचाप रख देना चाहिए, तो उस दिन से पति अनुकूल होने लग जाता है और कहना मानने लग जाता है।

५- प्रेमी या प्रेमिका को वश में करने के लिए

शुक्रवार के दिन २१ पीपल के पत्तों पर नींबू के रस से प्रेमी या प्रेमिका का नाम लिख दें और उन पत्तों को एक लाल कपड़े में **'वशीकरण गुटिका'** के साथ बांध कर किसी चौराहे पर रख दें, और फिर पलट कर

देखें नहीं, तो निश्चय ही जो नाम लिखा हुआ है--वह प्रेमी या प्रेमिका वश में हो जाती है, और जिस प्रकार से भी आज्ञा दी जाती है, उसका पालन होता है ।

६- व्यापार वृद्धि प्रयोग

यदि दुकान पर कोई तांत्रिक प्रयोग हो गया हो या व्यापार कमजोर हो गया हो अथवा ग्राहक नहीं आ रहे हों, तो यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए ।

रविवार की दोपहर को पांच नीबू काट कर दुकान में रख देने चाहिए, और साथ ही साथ एक मुट्ठी काली मिर्च, एक मुट्ठी सरसों तथा 'शत्रुहन्ता गुटिका' एक पात्र में रख कर दुकान में ही रख देने चाहिए, दूसरे दिन जब दुकान खोलें तो पात्र में रखा हुआ सामान–काली मिर्च, सरसों आदि उन नीबुओं के साथ कहीं दूर ले जा कर जमीन में गाड़ दें, तो दुकान पर किया हुआ तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाता है, व्यापार बढ़ने लगता हैं और ग्राहक भी पूरी क्षमता के साथ आने लगते हैं ।

७- कार्य की सफलता के लिए

कई बार चाहते हुए भी कोई कार्य नहीं हो पाता, अथवा रुपयों का लेन-देन अधूरा रह जाता है, तो ऐसी स्थिति में पांच लोहे की कीलें, पांच नमक की डलियां, पांच हरी मिर्च ले कर एक पात्र में रख देनी चाहिए, और उसमें **'बाधा निवारण गुटिका'** भी रख देनी चाहिए, ऐसे पात्र को पूरे चौबीस घण्टे घर में रखा रहने दें और फिर अपने ऊपर घुमा कर कहीं दूर फिकवा दें तो सारी समस्याएं दूर हो जाती हैं, तथा मन चाहा कार्य शीघ्र सम्पन्न हो जाता है ।

८- फंसा हुआ रुपया प्राप्त करने का प्रयोग

यदि किसी को रुपया दिया हो और वह वापिस लौटा नहीं रहा हो या उसमें अड़चन आ रही हो तो **'शत्रुस्तम्भन गुटिका'** ले कर अपने ऊपर सात बार घुमा दें, और जलती हुई आग में उसे डाल दें, डालते समय मुंह से उच्चरित करें कि मुझे अमुक व्यक्ति से रुपया प्राप्त हो जाय, तो इस प्रयोग के बाद तुरन्त वह कार्य सम्पन्न हो जाता है ।

९- बीमारी मिटाने का प्रयोग

यदि घर का कोई बालक, अपनी पत्नी, पुत्र या कोई व्यक्ति, स्वजन बीमार हो तो पानी के लोटे में **'रोग निवारण गुटिका'** रख कर उसे रोगी पर सात बार घुमाना चाहिए, और जल को जहां दो रास्ते मिलते हैं, वहां पर डाल देना चाहिए ।

ऐसा करते ही उसी क्षण से रोगी ठीक होने लगता है, और सभी दृष्टियों से अनुकूलता प्राप्त हो जाती है ।

ऊपर मैंने कुछ प्रयोग दिये हैं, जो भले ही सामान्य दिखाई देते हैं परन्तु इनका प्रभाव अपने आप में अचूक है, समस्त सामग्री आप कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप पत्रिका कार्यालय को मात्र पत्र लिख दें, वी०पी० से यह सामग्री आप के पास सुरक्षित रूप से पहुंच जायेगी ।

१-घुंघचू–११)रु०, २-हकीक–५)रु०, ३-विरुपाक्ष-१०)रु०, ४-भद्रबाहु-३०)रु०, ५-वशीकरण गुटिका-३०)रु० ६-शत्रुहन्ता गुटिका-३०)रु०, ७-बाधा निवारण गुटिका १५)रु०, ८-शत्रु स्तम्भन गुटिका–३०)रु०, ९-रोग निवारण गुटिका-२१)रु० ।

मैं दरवाजे पर खड़ा दस्तक दे रहा हूं

अपने जीवन में भ्रम, संदेह या असमंजस में रहने की जरूरत नहीं है, क्योंकि जीवन का बहुमूल्य और महत्वपूर्ण क्षण तो कभी-कभी ही आता है, और यदि ऐसे क्षण हम चूक जाते हैं तो जीवन में पछताने के अलावा कुछ भी हाथ नहीं लगता।

जीवन का तात्पर्य तो यह है कि तुम प्रत्येक क्षण को जीवन्त और जाग्रत बनाये रखो, तुम्हारी उन्नति के लिए जो द्वार खुला है, वह हमेशा ही खुला नहीं रहेगा, तुम्हारी उन्नति के लिए जो मार्ग प्रशस्त हुआ है, जिस पर चल कर तुम निश्चय ही पूर्णता तक पहुंच सकते हो, वह रास्ता हमेशा ही इतना अधिक फूलों से भरा हुआ नहीं रहेगा, क्योंकि इस रास्ते पर तो जगह-जगह अवरोध हैं, बाधाएं हैं, चुनौतियां हैं।

और यह रास्ता तो साल में एक बार खुलता है, जिसे **गुरु पूर्णिमा पर्व** कहते हैं, और यदि इस पर्व पर भी, इस रास्ते पर चल कर हमने अपने जीवन को पूर्णता का आयाम नहीं दिया तो फिर जीवन बेमानी हो जायेगा, और जीवन का कोई मकसद ही नहीं रहेगा।

गुरु पूर्णिमा तो बूंद का समुद्र से मिल जाने का पर्व है, एक उत्सव है, एक आयोजन है, जीवन की उमंग और उत्साह का परिचायक है, जो जीवन को जीना ही नहीं चाहते, वे गुरु पूर्णिमा जैसे पवित्र पर्व का महत्व भी नहीं समझ सकते, जिन्होंने अपने पांवों में समाज की मोटी-मोटी बेड़ियां पहन रखी हैं, जो सही अर्थों में कैदी हैं, वे इस आनन्द पर्व का उपयोग कर ही नहीं सकते क्योंकि यह पर्व कायरों और बुजदिलों का नहीं है, यह पर्व हताश और निराश व्यक्तियों का नहीं है, यह पर्व तो जोश से भरे हुए उमंग से उछलते हुए साधकों का पर्व है, जिनके रग-रग और रेशे-रेशे में जवानी फूट रही है, जिनके आंखों में चमक है, जिनके होंठों पर गीत थिरकते रहते हैं, और जिनके पांवों में मीरा की तरह घुंघरू बंधे हुए हुए हों, वे ही तो इस पर्व का आनन्द ले पाते हैं, और ऐसे ही साधकों से जीवन का निर्माण होता है, ऐसे ही साधकों से इतिहास बनता है, और ऐसे ही शिष्यों से जीवन की पूर्णता का परिचय होता है।

जागना : अति दुर्लभ

यह जान लो कि ज्ञान और बुद्धत्व प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है, यह भी मन में अच्छी तरह से विचार कर लेना चाहिए कि जाग जाना अपने आप में जीवन की श्रेष्ठता है, हम सपनों में और नींद में तो चलते ही रहते हैं, और जीवन का बहुत बड़ा भाग इसी प्रकार सपनों को देखने में और नींद में चलते हुए व्यतीत कर दिया है, परन्तु जिसके मन में जागने की लालसा है, जो पूरी तरह से चैतन्य हो कर इस विश्व को देखने की प्रक्रिया, रहस्य जानना चाहता है, उसे तो जागना ही पड़ता है, और यह बात भी याद रखो कि जागना अपने आप में एक

महत्वपूर्ण उपलब्धि है, पूर्ण रूप से जाग जाना एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना है, जो विश्व में अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में लि[illegible] देने के लिए पर्याप्त है।

और यह बात भी याद रखो कि यह जागने की प्रक्रिया रोज-रोज नहीं हो सकती, यह तो पूरे जीवन में एक बार और शायद एक बार ही घटना घटित होती है, और उसका सारा जीवन जगमगा उठता है, सिद्धार्थ नींद में ही खोये राज्य वैभव में मस्त चले जा रहे थे, कि एक घटना घटी और वे जाग गये, अहसास कर लिया कि जीवन जागने की प्रक्रिया है, और वे बुद्धत्व को प्राप्त हो गये, यही घटना महावीर के पूरे जीवन में एक बार घटी, शंकराचार्य गृहस्थ बनना चाहते थे, परन्तु एक क्षण आया और उसने सोचा कि जीवन तो सम्पूर्णता का पर्याय है और उसी क्षण वह संन्यास ले कर घर से निकल पड़ा, और वह छोटा सा बालक सही अर्थों में शंकराचार्य बन गया।

गुरु से मिलना ही जागने की प्रतीति

और यह जागने की प्रक्रिया तब होती है जब घर गृहस्थी के जाल से उलझा हुआ व्यक्ति गुरु से मिलने की इच्छा पैदा करता है, और हुलस करके हुमस करके आगे बढ़ता है, और गुरु से मिल जाता है; केवल मिलता ही नहीं, अपितु अपने आप को पूर्ण रूप से समर्पित कर देता है, और उसका यह समर्पण ही जागने की प्रक्रिया है, उसका यह समर्पण ही गुरु से एकाकार होने की प्रक्रिया है, वह वैसी ही प्रक्रिया है, जैसे एक छोटी सी बूंद समुद्र में मिल कर समुद्र का ही एक भाग बन जाती है, और जिस क्षण साधक या शिष्य आगे बढ़ कर गुरु से एकाकार हो जाता है, वह सही अर्थों में पूरी तरह से जाग जाता है और उसे ज्ञान की, चेतना की, बुद्धत्व की पूर्ण प्राप्ति हो जाती है।

यह संयोग तो कभी-कभी ही होता है

जीवन में चेतना की प्रक्रिया कभी-कभी ही तो हो सकती है, जीवन में कभी कोई क्षण ऐसा आता है कि व्यक्ति करवट बदलता है, और नींद से अलग हो कर जागने की चेष्टा करता है, और जब उसकी आंख खुलती है, तो सामने दरवाजा खुला मिलता है जिसमें से गुजर कर वह पूर्णता को प्राप्त कर सकता है, सिद्धियों के आयाम को हस्तगत कर सकता है, अपने जीवन को बुद्धत्व में बदल सकता है, अपने साधारणीकरण को शंकराचार्य के रूप में घटित कर सकता है।

और यह संयोग गुरु पूर्णिमा के अवसर पर ही आता है, ऐसा द्वार गुरु पूर्णिमा के दिन ही खुलता है, जिस द्वार से तुम प्रकाश की ओर बढ़ सकते हो, ऐसा रास्ता गुरु पूर्णिमा के माध्यम से ही उपलब्ध होता है, जिस रास्ते पर चल कर तुम इतिहास में अपना नाम अंकित कर सकते हो।

और यह तुम्हारा पहला जीवन ही नहीं है, कई-कई जीवन व्यतीत हो चुके हैं और तुम नींद में खोये हुए ही रहे हो, इसलिए कि कोई गुरु तुम्हें मिला ही नहीं, जो तुम्हें झकझोर कर जगा सके, कोई ऐसा चेतना पुरुष तुम्हारे जीवन में आया ही नही, जो तुम्हें समझा सके कि जीवन का तात्पर्य पूरी तरह से जाग जाना है, तुम्हें जीवन में कोई बुद्धत्व प्राप्त हुआ ही नहीं, जो तुम्हें बता सके कि धन, मान, पद, प्रतिष्ठा ऐश्वर्य और यह गृहस्थ सब स्वप्न है, क्योंकि यह तुम्हारे साथ आया नहीं है, यह तुम्हारे साथ जायेगा भी नहीं, फिर उसे अपना मान लेना भ्रम या निद्रा ही तो है।

पर पहली बार मैं तुम्हारे दरवाजे पर खड़ा दस्तक दे रहा हूं, तुम्हारी चेतना जागृत कर रहा हूं, तुम्हें आवाज दे रहा हूं, कि यदि जीवन को अपने हाथों में लेना है, यदि जीवन में आनन्द का उपयोग करना हैं, यदि जीवन में पूर्णता का अहसास करना है तो यह जरूरी है कि हम जगें, हम चैतन्य हों, उस व्यक्ति की उंगली पकड़ें - जो हमें इस रास्ते पर अग्रसर कर सकता है, और यह उंगली पकड़ने की प्रक्रिया गुरु पूर्णिमा पर्व पर ही सम्पन्न होती है।

चूक न जाना

और मैं फिर तुम्हें आगाह कर रहा हूं कि जिस प्रकार हर जीवन में तुम अपने जीवन को चूक रहे हो, उस प्रकार से इस जीवन में भी अपने आपको चूक मत जाना, अपने आपको भुलावे में मत डाल देना, कि आज नहीं तो कल कर लेंगे, इस बार नहीं तो अगली बार गुरु पूर्णिमा पर पहुंच जाएंगे, अभी नहीं तो फिर कभी बाद में गुरुदेव से मिल लेंगे, पर मैं कहता हूं कि यह तुम्हारा स्वप्न है, यह नींद में सुप्त बनाये रखने की प्रक्रिया है, यह फिर तुम्हें भुलावा देने की क्रिया है, और इस बार यदि तुम इस छलावे में आ गये, तो निश्चित ही फिर एक बार अपने जीवन को चूक जाओगे, फिर एक बार तुम्हारा जीवन सामान्य सा जीवन बन कर रह जायेगा, फिर एक बार तुम्हारा जीवन एक घटिया गृहस्थ का, एक घटिया व्यापारी का या एक मामूली नौकरी पेशे का जीवन बन कर रह जायेगा।

और फिर समय को पकड़ने और उसको जी लेने के संयोग कम हैं, इसकी अपेक्षा चूक जाने के अवसर ज्यादा हैं, नींद में गाफिल हो जाने के मौके ज्यादा हैं, यह तो तुम्हारे हाथ में है कि तुम इन दोनों में से कौन सा रास्ता अपनाते हो, यह तो तुम्हारे हाथ में है कि इस जीवन को घटिया जीवन के रूप में व्यतीत कर देना है या जीवन को पूर्णता के साथ प्राप्त कर लेना है, और इसके लिए गुरु-पूर्णिमा जीवन का शानदार संयोग है।

आवाज दे रहा हूं

इस गुरु पूर्णिमा के अवसर पर मैं तुम्हें आवाज दे रहा हूं कि तुम्हें आ कर पूरी तरह से मुझ में मिल जाना है, इस बहुमूल्य अवसर पर मैं तुम्हें सावधान कर रहा हूं कि एक क्षण भी तुमने गफलत की और सोचा, कि तुम फिर नींद में चले जाओगे और यह पूरा जीवन चूक जाओगे, मैं फिर तुम्हें सावधान कर रहा हूं कि यदि तुमने परिवार या समाज की बातों पर ध्यान दिया तो तुम्हारे पांवों में निश्चय ही बेड़ियां पड़ जाएंगी, और तुम अपने जीवन में जो कुछ प्राप्त करना चाहोगे, वह नहीं कर पाओगे।

इस बार मैंने तुम्हारे लिए ज्ञान का, चेतना का, बुद्धत्व का दरवाजा खोला है–गुरु पूर्णिमा के माध्यम से, जिसमें से हो कर तुम मुझ तक पहुंच सकते हो, मेरी धड़कनों के साथ अपनी धड़कनें मिला सकते हो, मेरे प्राणों के साथ अपने प्राणों को एकाकार कर सकते हो, और मेरे पास जो ज्ञान, जो भी चेतना, जो भी प्रकाश है-उससे तुम अपने आपको पूरी तरह से आप्लावित कर सकते हो।

कई-कई जन्मों के बाद ऐसा अवसर आया है कि तुम्हारे जीवन में एक चेतना पुरुष उपस्थित है, कई हजार वर्षों के बाद ऐसा अवसर पृथ्वी पर उतरा है कि स्वयं बुद्धत्व तुम्हें आवाज दे रहा है–अपने अन्दर आत्मसात करने के लिए, कई युगों के बाद फिर ऐसा अवसर आया है कि तुम अपने जीवन को सही अर्थों में इतिहास बना सको।

इस गुरु पूर्णिमा पर्व पर मैं तुम्हारे हृदय के दरवाजे पर खड़ा दस्तक दे रहा हूं, दोनों बाहें फैलाये अपने सीने से मिलाने के लिए आवाज दे रहा हूं कि तुम्हें घबराने की जरूरत नहीं है, चिन्तित और भयग्रस्त होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि तुम मेरे पास जो कुछ छोड़ करके आओगे वह सब कुछ कंकर पत्थर होंगे, और जो कुछ मुझसे प्राप्त कर लोगे, वह सही अर्थों में हीरे जवाहरात और बहुमूल्य सम्पदा होगी।

और मैं इस गुरु पूर्णिमा पर्व पर तुम सबको पूर्णता देने का, ज्ञानश्चेतना देने का, बुद्धत्व देने का विश्वास देता हूं, क्योंकि मैंने किसी जन्म में तुम्हें पूर्णता देने का वायदा किया होगा, और वह वायदा इस बार गुरु पूर्णिमा के अवसर पर पूरा कर देना चाहता हूं। ●

मैं तो साधना के माध्यम से

हर क्षण तुम्हें उपलब्ध हूं

गुरु पूर्णिमा पर्व पर तो हर हालत में जहां भी गुरु हों वहां आना ही चाहिए, और साल में एक बार तो गुरुदेव से व्यक्तिगत रूप से इस अवसर पर मिलना ही चाहिए।

पर यदि किसी कारणवश न आ सकें तो फिर इस प्रयोग को संपन्न कर गुरु पूर्णिमा के दिन गुरुदेव को सूक्ष्म रूप से अपने घर आमन्त्रित कर विशेष पूजन सम्पन्न कर ही लेना चाहिए।

एक विशेष प्रयोग विधि, जो अनुपस्थित साधकों और शिष्यों के लिए अनिवार्य है।

गुरु पूर्णिमा पर्व पर गुरुदेव से मिलना ही जीवन का सौभाग्य होता है, वास्तव में ही वे अभागे होते हैं जो ऐसे अद्वितीय और महान पर्व पर भी गुरुदेव से व्यक्तिगत रूप से नहीं मिल पाते या उनके चरणों में नहीं बैठ पाते, या उनका सत्संग नहीं ले पाते।

जो वास्तव में ही कमजोर हैं, जिन में साहस और हिम्मत नहीं है वे परिस्थितियों के आगे घुटने टेक देते हैं और गुरु पूर्णिमा पर्व पर उनके पास नहीं पहुंच पाते, वे कायर होते हैं जो अपने मन को यह समझा देते हैं कि पैसों की व्यवस्था ही नहीं है, कैसे जाना होगा, या वहां जाने से क्या लाभ होगा, या इतनी लम्बी यात्रा कैसे कर पाएंगे, अथवा भीड़ में गुरुदेव से मिलना होगा भी या नहीं, या इतनी बार गुरुदेव से मिल लिये हैं, फिर इस बार नहीं भी मिल लेंगे तो क्या हो जायेगा— आदि कायरता और बुझदिली के ही परिचय पत्र हैं, जिसके माध्यम से साधक अपने आपको समझाने की असफल चेष्टा करता है।

गुरुदेव से मिलना तो आनन्द का पर्व है

यह जीवन की आपा-धापी तो चलती ही रहेगी, परिवार की तरफ से ये बेड़ियां तो पांवों में पड़ती ही

रहेंगी पर जो वास्तव में ही साहसी हैं, जो वास्तव में ही क्षमतावान हैं, जिनके पुण्य उदय होते हैं, जो सौभाग्य के ललाट पर तिलक कर सकता है, वह किसी को परवाह नहीं करता और हुलस कर, हुमस कर आगे बढ़ जाता है, गुरु पूर्णिमा पर्व पर अपने प्रिय गुरुदेव से मिल कर जीवन को पूर्णता की ओर अग्रसर कर लेता है।

पर यदि फिर भी न आ पायें तो

हो सकता है, कोई कारण हो, कोई विशेष अड़चन हो, कोई ऐसी घटना हो, जिसकी वजह से हम गुरुदेव के पास पहुंच ही नहीं सकें, तब भी हमें गुरु पूर्णिमा जैसे महान पर्व पर इस प्रयोग को तो सम्पन्न कर ही लेना चाहिए, जिसके माध्यम से गुरुदेव सूक्ष्म रूप से घर में आ सकें, उनके आने का एहसास हो सके, और पूर्णता के साथ हम उनका पूजन, अर्चन कर सकें।

इसीलिए सिद्धाश्रम में प्रयुक्त उस विशेष विधि को पहली बार पत्रिका के माध्यम से स्पष्ट किया जा रहा है, जिसके द्वारा घर बैठे भी गुरुदेव को आमंत्रित करें और उनको घर पर आना ही पड़े, हमें यह आभास हो जाय कि वह विराट सत्ता घर पर आई है, हमें एहसास हो जाय कि उनकी उपस्थिति हमारे घर में है, और तब हम पूर्ण विधि-विधान के साथ गुरु पूजन सम्पन्न कर सकें, और जीवन को पूर्णता प्रदान कर सकें।

गुरु पूजन

यह सिद्धाश्रम द्वारा विशेष प्रयोग विधि है, जो केवल गुरु पूर्णिमा के दिन ही सम्पन्न की जाती है, क्योंकि यह एक ऐसी विधि है, जिसके माध्यम से गुरु को उसके घर में आना ही पड़ता है, उपस्थित होना ही पड़ता है, इसलिए इस प्रयोग को बार-बार सम्पन्न नहीं करना चाहिए अपितु विशेष अवसर पर इस प्रयोग को पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ सम्पन्न करना चाहिए, जिससे कि हम उनकी उपस्थिति का अहसास पूरी क्षमता के साथ कर सकें।

गुरु पूर्णिमा के दिन यों तो जहां गुरुदेव हों, वहीं पर जा कर उनका विशेष पूजन-अर्चन सम्पन्न करना चाहिए पर यदि ऐसा संभव न हो तो अपने घर पर ही पूजन सामग्री मंगा कर इस विशेष गुरु पूजन को सम्पन्न करना चाहिए।

इस पूजन क्रम में कुछ विशेष यन्त्र और पूजन सामग्री की आवश्यकता होती है, जो कि किसी महत्वपूर्ण स्थान से ही प्राप्त की हुई उपयोग में ली जाती है, इन में भी **'गुरु आहूत यन्त्र'**, विशेष महत्वपूर्ण है, इसके अलावा कुछ और साधना सामग्री होती है, जिसके माध्यम से यह गुरु पूजन क्रम सम्पन्न होता है।

इस में लगभग ग्यारह विशेष सामग्री यन्त्र आदि की जरूरत पड़ती है जिस में पूजन सामग्री भी शामिल है और यह सामग्री सामान्यतः बाजार में उपलब्ध नहीं होती इसीलिए पत्रिका कार्यालय ने उदारतापूर्वक इस सामग्री से सम्बन्धित एक पैकेट तैयार किया है जिसे **"गुरु पूर्णिमा पैकेट"** कहा गया है, इस पर व्यय १९४)रु० आ जाता है।

आपको अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, आप केवल पत्र द्वारा समय रहते ही सूचित कर दें कि मुझे दुर्लभ महत्वपूर्ण **"गुरु पूर्णिमा पैकेट"** की आवश्यकता है और हम आपको उपरोक्त मूल्य तथा डाक खर्च जोड़ कर वी०पी० से यह सामग्री भिजवा देंगे जिससे कि आपको सुरक्षित रूप से यह पैकेट और सामग्री प्राप्त हो सके।

पूजन प्रयोग

गुरु पूर्णिमा अर्थात् इस वर्ष २६ जुलाई ९१ को सुबह स्नान आदि से निवृत हो कर अपने पूजा स्थान में पीला आसन बिछा कर पीली धोती या पीली साड़ी पहन कर बैठ जांय सामने शुद्ध घृत का दीपक लगा लें और पहले से ही प्राप्त किया हुआ गुरु चित्र स्थापित कर दें।

इसके बाद पैकेट से प्राप्त गुरु यन्त्र को थाली में रख कर उसका जल से स्नान पूजन आदि सम्पन्न करें और उसे पौंछ कर केसर का तिलक करें और पुष्प आदि समर्पित करें, अगरबत्ती सुगन्धित द्रव्य आदि प्रयोग में लें।

यह पूजन आप स्वयं और सुविधा हो तो पूरे परिवार के साथ सम्पन्न करें, फिर जो पैकेट में विशेष गुरु माला आई है, उसके द्वारा निम्न गुरु आहूत मन्त्र की एक माला मन्त्र जप करें, यह मन्त्र अत्यन्त तेजस्वी होता है, और गुरु आहूत मन्त्र का तात्पर्य होता है कि हर हालत में गुरु को उपस्थित होना ही है, इसीलिए विशेष अवसरों पर ही इस मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

गुरु आहूत मन्त्र

ॐ श्रीं गुरुर्वै आहूतं पूर्णिमा त्वं सदं सह
विप्रे यता पूर्वे श्रियं सह मदैव चित्तं ।।

जब सुगन्ध सी अहसास हो या पदचाप सुनाई दे अथवा ऐसा लगे कि जैसे पूजा स्थान में कोई उपस्थित हुआ है तो पूर्ण भक्ति भाव से गुरुदेव को प्रणाम करें, और पैकेट में जो अन्य यन्त्र आदि हैं, उन्हें थाली में संजो कर रखें फिर इन सब का संक्षिप्त पूजन करें, सब पर केसर का तिलक करें, अक्षत पुष्प समर्पित करें।

इसके बाद हाथ में जल ले कर संकल्प लें कि इस गुरु पूर्णिमा के अवसर पर मैं अपने गुरु से (आपसे) पूर्ण एकाकार होना चाहता हूं, जिससे कि आपका सारा ज्ञान, आपकी गरिमा, और आपकी तेजस्विता प्राप्त हो सके, ऐसा कहते हुए जल छोड़ दें।

फिर पूरे विधि-विधान के साथ गुरुदेव का पूजन करें और गुरु चित्र को पुष्प हार पहनाएं तथा पूर्ण मनोयोग से गुरु मन्त्र की एक माला मन्त्र जप करें—

गुरु मन्त्र

।। ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।।

ऐसा करने से पूर्व अपने पास ही दाहिनी ओर पीला आसन बिछा देना चाहिए और उस पर पुष्प की पंखुड़ियां बिखेर देनी चाहिए, जिससे कि उस आसन पर गुरुदेव आ कर विराजमान हों।

अन्त में दूध के बने प्रसाद से गुरुदेव को भोग लगा कर पूरे विधि-विधान के साथ गुरु आरती सम्पन्न करें और फिर घर में जो पकवान बनाये हैं, पूरे परिवार के सदस्य मिल कर भोजन करें।

हमने इस पैकेट में कुछ विशेष प्रयोग विधि भी दी है, जो महत्वपूर्ण है, उसके अनुसार ही प्रयोग को सम्पन्न करें।

वास्तव में ही जो साधक या शिष्य किसी विशेष कारण से गुरु पूर्णिमा पर्व पर न आ सकें तो उन्हें यह प्रयोग अपने घर पर सम्पन्न कर लेना चाहिए और यदि पूरा परिवार गुरु पूर्णिमा पर न आ पा रहा हो और केवल घर का मुखिया ही आ रहा हो तो उसे चाहिए कि वह यह पैकेट पहले से ही मंगवा कर रख दे और अपनी पत्नी, पुत्र, पुत्र-वधू या पुत्री को यह हिदायत दे दें कि मेरी अनुपस्थिति में मेरे घर पर पूर्णिमा के दिन यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न कर लिया जाय।

यह अपने आप में एक महत्वपूर्ण सिद्धाश्रम से प्राप्त दुर्लभ प्रयोग है, जिसे प्रत्येक घर में सम्पन्न होना चाहिए। ●

गुरु पूर्णिमा शिविर स्थल का पता—

श्री चन्द्रशेखर भारती
कल्याण मन्दिर, पम्पा महाकवि रोड,
शंकरपुरम् , बैंगलौर-५६०००४ (कर्नाटक)

बैंगलौर कैसे पहुंचे

बंगलौर पहुंचने के लिए प्रत्येक बड़े शहर से सीधी ट्रेन है, वाराणसी, लखनऊ तथा दिल्ली से सीधी रेल सेवा, तथा वायुयान सेवा है, अहमदाबाद से भी बैंगलौर तक सीधी वायु सेवा है, इसके अलाव प्रत्येक बड़े शहर से बस की व्यवस्था है, फिर साधकों को चाहिए कि वे यथासंभव रेल सेवा का ही उपयोग करें।

बंगलौर का मौसम सामान्य अनुकूल रहेगा, इसलिए भारी कपड़े साथ में लाने की आवश्यकता नहीं है, जो साधक ऊटी जाना चाहें, उन्हें चाहिए कि वे एक स्वेटर अपने साथ रख लें।

बैंगलौर के आस-पास कुछ महत्वपूर्ण स्थान भी हैं, जो लगभग सौ मील के घेरे में हैं, और बेंगलौर से इन सब स्थानों पर रेल जाती है, यदि साधक गुरु पूर्णिमा के बाद अपनी इच्छा से इन स्थानों की यात्रा करना चाहें तो वे इन स्थानों को भी अपने यात्रा कार्यक्रम में रख सकते हैं, जिससे कि दक्षिण का लगभग पूरा टूर हो जायेगा।

जो महत्वपूर्ण स्थान देखने लायक हैं उनमें—नागार्जुन सागर, श्री शैलम, महानन्दी, करनूल, मन्त्रालयम, बैंगलौर, कालाहत्ती, मैसूर, ऊटी, कोडई कनाल, मदुराई, पालवीपुर, कन्याकुमारी, कोट्टालयम्, रामेश्वरम, मद्रास, तिरुपति, हैदराबाद आदि मुख्य हैं।

गुरु पूर्णिमा पर्व जीवन का सौभाग्यदायक पर्व है, हमारी राय में गुरु पूर्णिमा सम्पन्न होने के बाद ही उपरोक्त स्थानों की यात्रा का कार्यक्रम रखना चाहिए, क्योंकि संभवतः गुरु पूर्णिमा के बाद गुरुदेव इनमें से कुछ स्थानों की यात्रा का कार्यक्रम बनायें।

वास्तव में ही जिनके जीवन का पुण्य उदय होता है, जो जीवन में सौभाग्यशाली होते हैं, वे ही यात्रा के माध्यम से सम्पूर्ण भारतवर्ष को अपनी आंखों से देख पाने में समर्थ, सफल हो पाते हैं, और फिर जहां उत्तर भारत मन्दिरों के लिए, तीर्थ स्थलों के लिए, वहीं दक्षिण भारत भोजन के लिए विश्व विख्यात है ही।

हम सब शीघ्र गुरु पूर्णिमा के अवसर पर बैंगलौर में एकत्र हो रहे हैं, और एक बार पुनः सब गुरु भाई-बहिन मिल कर उस **आनन्द महोत्सव** में शामिल हो सकेंगे, जो हमारे जीवन का सौभाग्य कहा जा सकता है। ●

रजि० नं० ५५३०५/८१

पोस्टल एल०आर०जे० ३६६७/८६-८७

दुर्लभ और अद्वितीय आडियो कैसेटें

जो प्रामाणिक, दुर्लभ और गोपनीय ज्ञान से संचित हैं